Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

नई दिल्ली ● वर्ष 26 ● अंक 46 ● 18 अगस्त - 24 अगस्त, 2025 प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 16-08-2025 ● पेज 16 ₹ 10 रुपये

कालो नाग छे अतिही भूंडो,
ते एकण हीज भव मारें।
कुगुर उंधी सरधा सूं,
अनन्ता जामण मरण वधारें।।

काला नाग बहुत खतरनाक है। वह किसी को काटकर एक ही बार मारता है। कितना खतरनाक है कुगुरु, जो श्रद्धा को विपरीत बनाकर अनंत बार मारता है।
– आचार्यश्री भिक्षु

कर्म अवश्य ही करता है कर्ता का अनुगमन : आचार्यश्री महाश्रमण
पेज 02

भुक्त भोगों की ना हो स्मृति : आचार्यश्री महाश्रमण
पेज 16

Address Here

बाल्यावस्था है अर्जन की अवस्था : आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानशाला दिवस पर महाज्ञानी ने दिया ज्ञानार्थियों को मंगल आशीष

कोबा, गांधीनगर।
10 अगस्त , 2025

ज्योतिपुंज, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के पांचवें उद्देशक के आधार पर मंगल पाथेय प्रदान करते हुए कहा - प्राणी का जीवन अशाश्वत होता है। जैन दर्शन में जीव दो प्रकार के बताए गए हैं - एक सिद्ध और दूसरा संसारी। जो आत्माएं कर्ममुक्त हो गई हैं और सिद्धावस्था, मोक्षावस्था को प्राप्त हो गई हैं, वे सिद्ध जीव हैं। उन्हें मुक्त जीव या परमात्मा भी कहा जा सकता है। वे जीव कभी पुनः जन्म-मरण नहीं करते, शरीर धारण नहीं करते। वे अशरीरी होते हैं। उनके भाषा और मन भी नहीं होते। अनंत-अनंत आत्माएं सिद्ध हैं, मोक्ष को प्राप्त हो चुकी हैं और अनंत-अनंत जीव आगे मोक्ष में जाने वाले हैं।

सिद्ध जीवों के पास आयुष्य कर्म नहीं होता। कोई भी कर्म नहीं होता। इसलिए जो आयुष्य कर्म से जुड़ा हुआ प्राणी का जीवन होता है, वह जीवन सिद्धों का नहीं होता। संसारी प्राणी जो जन्म-मरण करते रहते हैं, उनका ही जीवन होता है। उनका जीवन कुश और नोक पर टिके हुए, अस्थिर एवं वायु से प्रकंपित होकर गिरे हुए जलकण की तरह होता है। इस प्रकार यह आयुष्य कर्म वाला जीवन शाश्वत नहीं होता। मृत्यु का होना तो निश्चित है, पर कब होना है यह कुछ संदर्भों में अनिश्चित है। यह जीवन का एक क्रम है कि जन्म होता है तो साथ में मृत्यु भी होती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि परिपूर्ण आयुष्य सौ वर्ष मानें तो इन सौ वर्षों में बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था भी आ जाती है।

बाल्यावस्था एक अर्जन की अवस्था है। इसमें विद्या का अर्जन किया जा सकता है। आज अनेकों विद्यार्थी विद्या संस्थानों से शिक्षित होते हैं और फिर अपने ढंग से कार्य करते हैं, सेवा देते हैं। विद्यार्थी अनेक विषयों का ज्ञान अर्जित करके वेत्ता बन सकता है, ज्ञान-संपन्न बन सकता है। ज्ञान होना अच्छी बात है, पर ज्ञान के साथ चरित्र भी अच्छा होना चाहिए। विद्या और आचार दोनों होने से मुक्ति मिलती है। शिक्षा और संस्कार दोनों होते हैं तो विद्यार्थी का जीवन श्रेष्ठ बन सकता है। कुछ बच्चे संयमी, संस्कारी होते हैं, इसके विपरीत कुछ बच्चों में अति चंचलता और उद्दंडता देखने को मिलती है। इसका कारण है - पिछले जन्मों के संस्कार। पिछले जन्मों से जो कर्म का उदय या क्षयोपशम का भाव हमारे भीतर है, वही कारण है।

बच्चा कोरा कागज हो या पहले से कोई संस्कार लेकर आ रहा हो, हमारा कर्तव्य है कि वर्तमान में बच्चों को अच्छे संस्कार देने का प्रयास करें। पहले से यदि कोई बालक लिखाकर लाया भी है तो जहां तक हो सके गलत बातों को मिटाकर नया लिखने का प्रयास करें। बच्चों के मन और भावों पर अच्छे संस्कार आएं, यह पुरुषार्थ करने से हो सकता है। पुरुषार्थ करने पर तत्काल निष्पत्ति न भी आए, पर हमें सत्पुरुषार्थ करते रहना चाहिए। बालकों का जीवन अभी प्रारंभ हुआ है, यदि वे अच्छे संस्कार वाले बन जाएं तो उनका युवावस्था और वृद्धावस्था का जीवन भी अच्छे संस्कारों से युक्त रह सकता है। यह एक कल्याणकारी कार्य होगा। (शेष पेज 13 पर)

आध्यात्मिक और सांसारिक संदर्भों में रखें साध्य-साधन का विवेक : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
11 अगस्त , 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अनुशास्ता, शांतिदूत युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा कि आदमी सुख पाने के लिए प्रयत्न करता है। उसे समृद्धि मिले, सुख-सुविधा के साधन और धन-संपत्ति प्राप्त हों—इन आकांक्षाओं के साथ वह प्रयास करता है। कई बार अच्छे-बुरे का विचार गौण करके, निष्ठुर और निर्दय कार्य भी कुछ पाने के लिए कर लेता है। परिणामस्वरूप, सुख की जगह दुःख प्राप्त हो जाता है।

यदि कोई गृहस्थ है तो पैसा पाना भी उसका साध्य बन सकता है। उस साध्य की प्राप्ति के लिए यदि कोई व्यक्ति निष्ठुर हिंसा, बेईमानी, धोखाधड़ी, हेराफेरी आदि का सहारा लेता है तो उसका साधन गलत हो जाता है। संभव है कि उसे भौतिक सुख मिल जाए, लेकिन कई बार सुख की जगह दुःख और कठिनाई भी मिल सकती है। इस विषय में ध्यान रखना चाहिए कि साध्य दो प्रकार के होते हैं—एक

आध्यात्मिक साध्य और दूसरा सांसारिक (लौकिक) साध्य। आध्यात्मिक साध्य की दृष्टि से मोक्ष पाना ही विशुद्ध साध्य है। स्वर्ग की कामना करना विशुद्ध साध्य नहीं है, क्योंकि वहां से पुनः लौटना पड़ता है, जबकि मोक्ष में पहुंच चुकी आत्मा अप्रकंप और शाश्वत रहती है। मोक्ष प्राप्ति का साधन ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप है। यह शुद्ध साध्य और शुद्ध साधन है।

सांसारिक संदर्भ में किसी का साध्य धनवान बनना या राजनीति में जाना हो सकता है। इसमें भी जितना संभव हो सके साधन अहिंसा और संयमयुक्त होना चाहिए। तभी गृहस्थ जीवन के साध्य की प्राप्ति भी कम पाप वाला, निर्मल साधन बन सकती है। 'आयारो' में कहा गया है कि सांसारिक साध्य को प्राप्त करने के लिए भी निष्ठुर कर्म नहीं करना चाहिए।

प्रशासन से जुड़े लोगों का साध्य नगर में शांति-व्यवस्था स्थापित करना होता है। यह साध्य राष्ट्रीय दृष्टि से उचित है। किंतु इसके लिए प्रयत्न करते समय अहिंसा और संयम का ध्यान रखा जाना चाहिए। यदि समझाइश आदि से काम न बने तो मजबूरी में कठोर उपाय अपनाने पड़ सकते हैं, फिर भी यथासंभव साधन निर्मल बने रहें। इसी प्रकार व्यापार-धंधे में भी बेईमानी, झूठ और कपट न हो तो सांसारिक साधन की शुद्धता बनी रहती है। (शेष पेज 13 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
18 अगस्त - 24 अगस्त, 2025
हे प्रभो! यह तेरापंथ

अहिंसक चेतना को पुष्ट करने के लिए करें कामनाओं पर नियंत्रण : आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ के राम ने किया मुमुक्षु हनुमान दूगड़ की दीक्षा की अर्जी को स्वीकार

कोबा, गांधीनगर।
09 अगस्त, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, ज्योतिपुंज आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम पर आधारित पावन देशना प्रदान करते हुए कहा - दुनिया में हिंसा भी चलती है। जहां राग-द्वेष होता है, वहां हिंसा की भी संभावना बन जाती है। आदमी हिंसा, हत्या की प्रवृत्ति करता है तो उसके कारण राग-द्वेष होते हैं। आदमी अर्थ, काम, सम्प्रदाय और सत्ता पाने के लिए हिंसा में प्रवृत्त हो सकता है। इस प्रकार हिंसा के कई प्रयोजन हो जाते हैं।

आयारो में कहा गया है कि हिंसा में प्रवृत्त लोगों में कामनाएं बहुत ज्यादा हो जाती हैं, जिससे वे हिंसा में प्रवृत्त होते हैं। यदि अपरिग्रह की सम्पूर्ण चेतना जाग जाए तो फिर आदमी संभवतः हिंसा-हत्या की ओर जा ही नहीं सकता। 'अपरिग्रह' भी बड़ा महान धर्म है। जहां परिग्रह से पकड़ है, मूर्च्छा है, आसक्ति है, वहां हिंसा भी पकड़ी जा सकती है। अहिंसा की चेतना को पुष्ट करने के लिए आदमी कामनाओं पर नियंत्रण करे। असीम और अनियंत्रित कामनाएं आदमी में न हों।

परिग्रह के दो प्रकार बताए गए हैं - द्रव्य परिग्रह और भाव परिग्रह। द्रव्य परिग्रह पदार्थ है और भाव परिग्रह है मूर्च्छा, आसक्ति। पदार्थ कर्मों का बंध नहीं करा सकते, कर्मों का बंध तो आसक्ति और मोह ही करा सकता है। कहा गया है - ये काम, भोग, पदार्थ, इन्द्रिय विषय न तो समता पैदा कर सकते हैं और न ही विकृति। भीतर में जो द्वेष, मूर्च्छा, आसक्ति के भाव हैं, वे पदार्थों में मोह हो जाने के कारण विकृति को प्राप्त कर लेते हैं।

साधु के पास भी धर्मोपकरण होते हैं। यदि इनमें साधु की मूर्च्छा नहीं हो, आसक्ति का भाव न हो तो इन पदार्थों के रहते हुए भी कर्मों का बंध नहीं हो सकता। ये पदार्थ केवल मूर्च्छा में निमित्त बन सकते हैं। साधना के क्षेत्र में उपादान तो मूल है ही, पर इन निमित्तों पर भी ध्यान देना चाहिए। निमित्त कई बार उपादान को उत्तेजित करने में सहायक बन सकते हैं।

गृहस्थ परिग्रह से एकदम बच जाएं यह संभव नहीं है, लेकिन भीतर से अनासक्ति का भाव रहे, ज्यादा मोह-मूर्च्छा न हो। जो परिग्रह है, उसका व्यक्तिगत उपभोग में संयम रखें। पैसा होते हुए भी खान-पान, कपड़े आदि में व्यक्तिगत संयम रखें। 'मैं अकेला हूं' यह भाव रहे। आसक्ति नहीं रहती तो परिग्रह का आत्मा पर इतना भार नहीं रहता।

अपरिग्रह की चेतना पुष्ट होगी तो अहिंसा की भावना भी जीवन में पुष्ट हो सकेगी। अतः श्रावक को परिग्रह को छोड़ने का जितना संभव हो सके, प्रयास करना चाहिए। कामना, लालसा को हल्का करने का प्रयास करना चाहिए और आसक्ति भी ज्यादा न हो, ऐसा प्रयत्न रहना चाहिए। द्रव्य परिग्रह का भी एक उम्र आने के बाद जितना स्वामित्व छोड़ा जा सके, उसे छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने जनता को 'तेरापंथ प्रबोध' के आख्यान से लाभान्वित किया। आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त साध्वीवर्याजी ने जनता को उत्प्रेरित किया। मुमुक्षु हनुमान दूगड़ ने अपनी भावनाओं के द्वारा गुरुचरणों में अर्ज लगाई तो आचार्यश्री ने मुमुक्षु की अर्जी पर विशेष कृपा बरसाते हुए कहा कि प्रेक्षा विश्व भारती में कार्तिक शुक्ला पंचमी, 26 अक्टूबर 2025 (रविवार) को हनुमानजी दूगड़ को मुनि दीक्षा देने का भाव है। आचार्यश्री की इस कृपा से मुमुक्षु हनुमान दूगड़ ही नहीं, उनके परिजन व पूरा प्रवचन पण्डाल जयघोष कर उठा।

कर्म अवश्य ही करता है कर्ता का अनुगमन : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
08 अगस्त,, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि किए हुए कर्म का फल भोगना होता है। अतीत में अच्छा कर्म किया है तो अच्छा फल मिलेगा, दुराचरण, बद आचरण, कदाचरण किया है तो उसका अशुभ फल मिल सकेगा। शास्त्रकार ने कहा है कि कर्म सफल होता है। यह जानकर ज्ञानी, शास्त्रों का जानकार, कर्मों का संचय न हो इस बात पर ध्यान देता है और कर्म संचय से निवृत्त हो जाता है। अर्थात् संवर की साधना करता है।

कर्म अर्थात् व्यक्ति की जैसी प्रवृत्ति, अध्यवसाय जैसे होते हैं, उनसे कर्म पुद्गलों का आकर्षण होता है। कर्म आत्मा से बद्ध हो जाते हैं, फिर समय आने पर वे अपना फल देते हैं। कर्म का फल किस समय मिलेगा, इसे दो उदाहरणों द्वारा समझ सकते हैं - जैसे घड़ी में अलार्म लगा दिया जाता है तो घड़ी उतने समय पर बजने लगती है अथवा कोई टाइम बम की टाइमिंग सेट कर दी जाती है और वह समय पूरा होते ही फट जाता है। इसी प्रकार प्राणी ने जैसा कर्म बांधा है, समय आने पर वह वैसा ही फल देता है।

कर्म बंध दो प्रकार का है - पहला पाप कर्म का बंधन और दूसरा पुण्य कर्म का बंधन। पाप कर्म का बंधन होता है तो जीवन में कष्ट-कठिनाइयां झेलनी पड़ती हैं। हमें पहले यह ध्यान देना चाहिए कि पाप कर्मों का बंधन न हो। ज्ञानावरणीय कर्म बंध जब फल देता है तो मानसिक अक्षमता होती है, असातवेदनीय कर्म बंध से शारीरिक अक्षमता होती है। किसी पर झूठा आरोप लगा देने का परिणाम अपयश के रूप में भोगना पड़ता है। हिंसा, हत्या जैसे पाप कर्म ऐसे हैं जो सघन बंध कराने वाले होते हैं। व्यक्ति को ऐसे पाप कर्मों से बचने का प्रयास करना चाहिए।

व्यक्ति को पुण्य कर्म भी भोगने होते हैं। पुण्य कर्म का बंध अच्छे आचरणों से होता है। पुण्य का बंध होता है तो शारीरिक सक्षमता होती है। शारीरिक सक्षम व्यक्ति किसी को सेवा देने आदि कार्य कर सकता है। शरीर की सुंदरता, स्वस्थता होना भी पुण्याई का ही प्रतिफल होता है। इसलिए व्यक्ति को अपने वर्तमान जीवन का अच्छा उपयोग करना चाहिए। अच्छे कर्म, सेवा आदि में समय लगाने का प्रयास होना चाहिए। व्यक्ति को अपनी तपस्या, साधना आदि के संदर्भ में पुण्य कर्म के अर्जन का प्रयास नहीं करना चाहिए।

व्यक्ति जब भी कोई तप करता है, साधना या सेवा करता है तो निर्जरा के साथ उसे पुण्य का भी अर्जन होता है। फिर भी व्यक्ति को अपने पुण्य कर्मों का निदान नहीं करना चाहिए। निदान करना वैसा है जैसे कोई व्यक्ति हीरे को कौड़ी के भाव बेच दे। साधुपन, संयम रत्न प्राप्त हो जाना बड़े सौभाग्य की बात होती है। व्यक्ति संवर की साधना करे तो कर्म के बंधन से बच सकता है।

आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी का वर्ष चल रहा है। इसमें अपने संन्यास जीवन को तेजस्वी बनाने का प्रयास होना चाहिए। परम पूज्य भिक्षु स्वामी ने अपने जीवन में कितनी तपस्याएं कीं, साहित्य सृजन किया। उनके जीवन से सभी को प्रेरणा प्राप्त होती रहे।

आचार्यश्री ने मंगल प्रवचन के उपरान्त चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी के क्रम को संपादित करते हुए विविध प्रेरणाएं प्रदान कीं। आचार्यश्री की अनुज्ञा से मुनि सिद्धकुमारजी व मुनि संयमकुमारजी ने लेखपत्र का वाचन किया। आचार्यश्री ने दोनों संतों को दो-दो कल्याणक बक्सीस किए। तदुपरान्त समुपस्थित चारित्रात्माओं ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र उच्चरित किया।

प्रेक्षा कल्याण वर्ष के अंतर्गत आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में एक माह तक प्रेक्षा प्रशिक्षक प्रशिक्षण सघन साधना शिविर का क्रम चला। इस संदर्भ में पारसमूल दूगड़ ने जानकारी दी। उपस्थित शिविरार्थियों ने गीत का संगान किया। प्रेक्षा इंटरनेशनल के अध्यक्ष अरविंद संचेती ने अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने सभी शिविरार्थियों को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
18 अगस्त - 24 अगस्त, 2025

भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला एवं शपथ ग्रहण समारोह

भायंदर।

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, भायंदर द्वारा तेरापंथ भवन, भायंदर (पश्चिम) में मुंबई स्तरीय भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला एवं सामूहिक शपथ ग्रहण समारोह का भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम का सान्निध्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्या 'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' आदि ठाणा-5 ने प्रदान किया। इस अवसर पर अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। भायंदर कन्या मंडल ने तिलक द्वारा तथा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने कारगिल दिवस की वेशभूषा में परेड द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा का मनमोहक स्वागत किया। विशिष्ट अतिथि अभातेयुप सहमंत्री प्रथम भूपेश कोठारी, कार्यशाला राष्ट्रीय सहप्रभारी राकेश पोखरना, भायंदर परिषद प्रभारी मयंक धाकड, तथा मुख्य वक्ता राजेश छाजेड़ एवं चिराग पामेचा थे। कार्यक्रम में स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण, अभातेयुप परिवार एवं मुंबई की युवाशक्ति ने गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। तेयुप ने विजय गीत प्रस्तुत कर मंगलाचरण किया। इसके पश्चात राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने कार्यशाला के संचालन की विधिवत घोषणा की एवं श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। स्थानीय तेयुप ने राष्ट्रीय अध्यक्ष का मधुर गीत के माध्यम से आत्मीय सम्मान किया। भायंदर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष दिलीप बापना एवं तेयुप अध्यक्ष भावेश सोलंकी ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि साध्वीश्री की प्रेरणा से हमें यह स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है। डॉ. साध्वी ऋद्धियशाजी ने दया-दान विषय पर विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया। साध्वी प्रेरणाश्रीजी, साध्वी मृदुयशाजी एवं साध्वी श्री ऋद्धियशाजी ने युवकों को जागृत करने हेतु प्रेरक गीत 'ओ महानगर के युवकों कदम बढ़ाओ' का संगान किया।

साध्वी प्रियंवदाजी ने आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व एवं रहस्यपूर्ण सिद्धांतों को उदाहरणों सहित समझाते हुए कहा कि उनके सिद्धांत पूर्णतः सटीक एवं मार्मिक हैं। 'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' ने प्रेरणा देते हुए कहा— आचार्य भिक्षु एक वज्रपुरुष थे, जिन्हें संघर्ष, विरोध एवं प्रतिकूल वातावरण भी प्रभावित नहीं कर सके। शिथिलाचार के झंझावातों को उन्होंने ऐसे पार किया जैसे एक कुशल नाविक समंदर की सुनामी से सुरक्षित बाहर आ जाता है। उनका लक्ष्य था — 'मर पूरा देस्यां, आतम कारज सारस्यां' और उन्होंने अंतिम सांस तक अपने संकल्प को दृढ़ता से निभाया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने कहा— कार्यशालाओं का मुख्य उद्देश्य है आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों और परंपराओं से युवाओं को परिचित कराना। मुझे प्रसन्नता है कि पिछले वर्ष और इस वर्ष की मिलाकर लगभग 80 भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन हो चुका है और भायंदर तेरापंथ युवक परिषद ने इस आयोजन द्वारा इस आयाम को नई ऊँचाई दी है।

मुख्य वक्ता चिराग पामेचा ने स्किल डेवलपमेंट और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को आचार्य भिक्षु स्वामी से जोड़ते हुए बताया कि ढाई सौ वर्ष पूर्व ही भिक्षु स्वामी ने ऐसा अद्वितीय कार्य कर दिखाया था, जो आज के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की महानता के समान है। राजेश छाजेड़ ने अपने संबोधन में कहा कि कर्म किसी के सगे नहीं होते। जब तक हम अपने भीतर भरे हुए कर्मों को खाली नहीं करेंगे, तब तक भिक्षु को समझ पाना संभव नहीं। भगवान ने मोक्ष का केवल एक ही मार्ग बताया है — सम्यक त्रिवेणी : सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र। सम्यक्त्व को समझना ही आचार्य भिक्षु को समझना है। मुख्य प्रायोजक बडाला परिवार एवं सह-प्रायोजक आच्छा परिवार का सम्मान दुपट्टा और मोमेंटो से किया गया। सहमंत्री भूपेश कोठारी, कार्यशाला राष्ट्रीय सहप्रभारी राकेश पोखरना एवं भायंदर परिषद प्रभारी मयंक धाकड़ ने भी अपने विचार प्रकट किए। अभातेयुप सदस्य नीरज आच्छा ने जानकारी दी कि भायंदर की भिक्षु भजन मंडली सरगम प्रतियोगिता में क्वार्टर फाइनल जीतकर अब बेंगलुरु में सेमीफाइनल में प्रवेश कर चुकी है। उपासक कवि परेश भंडारी ने कविता के माध्यम से आचार्य भिक्षु स्वामी के प्रति गहन भाव प्रकट किए।

इस अवसर पर अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने मुंबई स्तरीय सभी परिषद अध्यक्षों को शपथ दिलाई तथा तत्पश्चात उपस्थित सभी तेयुप सदस्यों को सामूहिक रूप से शपथ ग्रहण करवाई।

उन्होंने मंगलकामना व्यक्त करते हुए कहा कि अभातेयुप अपनी 365 शाखाओं के माध्यम से पूरे देश में सेवा, संस्कार और संगठन के कार्य कर रही है। उन्होंने विशेष रूप से कहा कि सेवा ही हमारी पहचान है और सभी परिषदों से निवेदन किया कि चाहे क्षेत्र में चातुर्मास हो या न हो, कम से कम सप्ताह में एक दिन निकटतम चरित्रात्माओं के दर्शन एवं सेवा कार्य का संकल्प अवश्य लें।

उन्होंने आगामी 17 सितंबर को होने वाले MBDD – मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव की जानकारी दी, जो न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व का सबसे बड़ा आयाम होगा।

इस अवसर पर MBDD का बैनर भी अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं ABTYP टीम की उपस्थिति में अनावरण किया गया। अंत में मंत्री मनोज कच्छारा ने सभी पधारे हुए महानुभावों का हार्दिक आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन नीरज आच्छा और कुलदीप लोढा ने किया।

पंचगंठी पंचमेष्ठी आत्म रक्षा कवच अनुष्ठान का आयोजन

सिटीलाइट, सूरत।

प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में जैन प्रभावक मंत्रों के साथ पंचगंठी पंचमेष्ठी आत्मरक्षा कवच अनुष्ठान का आयोजन हुआ। मंत्राधिराज नमस्कार महामंत्र पर आधारित इस दिव्य अनुष्ठान में हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागिता की।

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि जैन परंपरा का सर्वोत्तम महामंत्र ‘नमस्कार महामंत्र’ शक्ति संप्रेषण करने वाला, ऊर्जा-संपर्क स्थापित करने वाली विशिष्ट साधना है। इसकी आराधना से व्यक्ति आत्मिक शक्ति, आनंद और शांति प्राप्त कर सकता है। उन्होंने बताया कि जिस प्रकार एक सिक्योरिटी गार्ड हमारी रक्षा करता है, उसी प्रकार यह महामंत्र कवच भी हमारी सुरक्षा करता है और विघ्नों का निवारण करता है। आवश्यकता है कि इसे श्रद्धा और विश्वास के साथ साधना में अपनाया जाए। उन्होंने प्रेरणा देते हुए कहा कि प्रत्येक जैन धर्मावलंबी को इस मंत्र की सतत साधना करनी चाहिए, क्योंकि यह हमारी अमूल्य विरासत है।

जैन इतिहास में इस महामंत्र से जुड़े अनेक चमत्कारिक प्रसंग मिलते हैं, जो पाँच रंगों से संबद्ध हैं। यह महामंत्र औषधि की भांति रोगों का भी नाश करता है। अनुष्ठान की शुरुआत साध्वी मंगलप्रज्ञा जी द्वारा रचित ‘महामंत्र स्तुति’ के साथ हुई, जिसे साध्वी अतुलयशा जी, साध्वी डॉ. राजुलप्रभा जी, साध्वी डॉ. चैतन्यप्रभा जी और साध्वी डॉ. शौर्यप्रभा जी ने प्रस्तुत किया। तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में आयोजित यह अनुष्ठान अत्यंत प्रभावशाली रहा।

अनुष्ठान से पूर्व साध्वी डॉ. राजुलप्रभा जी ने मंगलभावनाओं का प्रयोग करवाया तथा साध्वी डॉ. शौर्यप्रभा जी ने महावीर वाणी का रसास्वादन करवाया।

सुदीर्घजीवी 'शासनश्री' साध्वी बिदामांजी की स्मृति सभा

धूरी, पंजाब।

साध्वी कनकरेखाजी के सान्निध्य में 'शासनश्री' साध्वी बिदामांजी की स्मृति सभा आयोजित की गई। साध्वी कनकरेखा जी ने स्मृति सभा में उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में नया कीर्तिमान रचने वाली 'सुदीर्घजीवी' 'शासनश्री' साध्वी बिदामांजी एक सौ सात वर्ष के रनिंग काल में अनशन स्वीकार किया। साध्वी उज्जवलरेखा जी एवं सहवर्तिनी साध्वियों को सेवा का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। साध्वी बिदामांजी का जीवन बड़ा ही सहज था। शांत स्वभावी, सेवाभावी, दृढ़ मनोबली साध्वीश्री अपनी संयम साधना के प्रति पूर्ण जागरूक थी। मौन, जप, स्वाध्याय आदि नियमित दिनचर्या के प्रति पूर्ण सजग थी। अपने संयम जीवन पर्याय में एलोपैथिक औषधि का सदा वर्जन किया। 84 वर्ष के संयम पर्याय का अद्भुत घटना प्रसंग हमारे लिए आदर्श है। दिवंगत आत्मा आध्यात्मिक विकास के साथ शीघ्र ही मुक्तिश्री का वरण करें। स्मृति सभा के अन्तिम चरण में साध्वीवृंद एवं श्रद्धालु श्रावक समाज ने लोगस्स ध्यान के साथ श्रद्धा समर्पित की।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
18 अगस्त - 24 अगस्त, 2025

नवरंगी तप अनुमोदना के उपलक्ष्य में भक्ति संध्या

यशवंतपुर।

तेरापंथ युवक परिषद, यशवंतपुर द्वारा साध्वी सोमयशाजी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा भवन, यशवंतपुर में भक्ति संध्या का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। तेयुप यशवंतपुर अध्यक्ष धर्मेश डूंगरवाल ने सभी का स्वागत करते हुए साध्वीश्री के चरणों में कृतज्ञता व्यक्त की तथा तपस्वियों के प्रति मंगलकामनाएँ प्रेषित कीं।

भक्ति संध्या में अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भजनों से वातावरण को भक्तिमय बनाया। प्रसिद्ध भजन मंडली प्रज्ञा संगीत सुधा की विशेष प्रस्तुति कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रही। मंडली के साथियों ने एक से बढ़कर एक भजन प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। हितेश दक और बालक हर्षल बरडिया की प्रस्तुति भी सराहनीय रही।

तेरापंथ युवक परिषद, यशवंतपुर के सदस्यों द्वारा तपस्वियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर तेयुप यशवंतपुर के पदाधिकारी एवं सदस्य, अभातेयुप साथी विनोद मुथा एवं विशाल पितलिया, तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश बरडिया एवं उनकी टीम, महिला मंडल अध्यक्ष रेखा पितलिया एवं टीम के साथ सम्पत डूँगरवाल, रमेश बाबेल, प्रीति मुथा सहित संपूर्ण समाज के सदस्य उपस्थित रहे। मंच संचालन एवं आभार-प्रदर्शन का कार्य तेयुप मंत्री अभिषेक पोखरना ने संपन्न किया।

'कौन बनेगा चैंपियन (KBC) 2025' का हुआ सफलतम आयोजन

अहमदाबाद।

तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के पावन अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा एक अनूठे एवं प्रेरणादायी आध्यात्मिक क्विज़ 'कौन बनेगा चैंपियन (KBC) 2025' का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता न केवल ज्ञानवर्धक रही, बल्कि युवाओं में आध्यात्मिक इतिहास के प्रति रुचि जगाने वाली सिद्ध हुई। इस प्रतियोगिता का आधार 'तेरापंथ का इतिहास (खण्ड-1)' पुस्तक थी। युवाओं को स्वाध्याय के लिए ऑनलाइन मॉक टेस्ट के माध्यम से मार्गदर्शन दिया गया, जिसमें कुल 8 मॉक टेस्ट शामिल थे। पूरे देश से लगभग 2000 किशोरों और युवकों ने इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पंजीकरण करवाया।

चार चरणों और क्वार्टर फाइनल तक की ऑनलाइन प्रक्रिया के बाद, देशभर से 93 प्रतिभागी चयनित होकर कोबा, अहमदाबाद पहुंचे, जहाँ सेमीफाइनल व ग्रैंड फिनाले का आयोजन प्रेक्षा विश्व भारती परिसर में 20 जुलाई को परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के मंगल सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन सुप्रसिद्ध संगायक कमल सेठिया ने शानदार अंदाज़ में किया। ग्रैंड फिनाले के अवसर पर अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा, उपाध्यक्ष जयेश मेहता सहित अभातेयुप परिवार के पदाधिकारी, समाज के गणमान्य व्यक्ति एवं सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित रहे। सभी ने सामूहिक रूप से गुरुदेव के श्रीचरणों में कार्यक्रम की सम्पूर्ण जानकारी प्रेषित की और मंगलपाठ का श्रवण किया। गुरुदेव के प्रति सभी ने अनंत कृतज्ञता प्रकट की।

प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों के नाम निम्नलिखित हैं:

1. पंकज हिरन – विरार
2. ऋत्विक बोथरा – बीदासर
3. राहुल जैन – जयपुर
4. विनय गुलगुलिया – रायपुर
5. मनीष डागा – अहमदाबाद
6. भावेश मेहता – केलवा

कार्यक्रम के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमार जी ने अपने वक्तव्य से सभी को प्रेरित किया। वहीं, मुनि जंबुकुमार जी के मार्गदर्शन में KBC कार्यक्रम अपने चरमोत्कर्ष तक पहुंचा। कार्यक्रम की सफलता में अभातेयुप उपाध्यक्ष जयेश मेहता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही, जिनके निर्देशन में राष्ट्रीय संयोजक कुलदीप नवलखा, राष्ट्रीय सह-संयोजक उत्कर्ष खाब्या एवं पूरी राष्ट्रीय टीम ने दिन-रात परिश्रम कर इस आयोजन को ऐतिहासिक स्वरूप प्रदान किया। इस भव्य आयोजन में अहमदाबाद अभातेयुप परिवार, तेयुप अहमदाबाद एवं अमराईवाड़ी-ओढव इकाइयों का उल्लेखनीय सहयोग रहा। साथ ही, संजय बैद – गुरुपुनवानी ग्रुप जैसे सहयोगी परिवारों ने कार्यक्रम को गति प्रदान करने में सारथी की भूमिका निभाई, जिसके लिए अभातेयुप परिवार ने हृदय से आभार व्यक्त किया। KBC कार्यक्रम को देशभर की जनता तक सीधे पहुंचाने में जेटीएन व अमृतवाणी टीम का विशेष योगदान रहा, जिन्होंने आयोजन को सजीव प्रसारण के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया।

संक्षिप्त खबर

अभिनव अंताक्षरी का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता। मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अभिनव अंताक्षरी का भव्य आयोजन भिक्षु विहार में तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा किया गया। अभिनव अंताक्षरी में तीन-तीन व्यक्तियों के दस ग्रुप बनाये गए। अंताक्षरी 3 राउण्ड में आयोजित हुई जिसमें प्रतियोगियों को सामान्य रूप से, गीत, अंतरा, प्रश्न, अक्षर, चित्रकारी आदि माध्यमों से अंताक्षरी करवाई गई। अंताक्षरी में प्रथम स्थान पर श्री तुलसी ग्रुप के सदस्य खुश्बू श्यामसुखा, मंजु चौपड़, हंसा सुराना द्वितीय स्थान पर श्री जीतमल ग्रुप के सदस्य वीरेन्द्र सेठिया, मनोज खटेड, मुकुल श्यामसुखा, तृतीय स्थान पर श्री भिक्षु ग्रुप के सदस्य धीरज मालू, अक्षज बोथरा, रिषभ दुगड़ रहे। कार्यक्रम का संचालन तेयुप व किशोर मंडल के सदस्यों द्वारा किया गया। मुनि जिनेश कुमार जी ने अंताक्षरी को सब गीतों के स्वाध्याय का सुन्दर अवसर बताते हुए सभी के प्रति प्रमोद भावना व्यक्त की। आभार ज्ञापन लोकेश दुगड़ द्वारा किया गया। अंताक्षरी के संयोजक मनोज श्यामसुखा व सह संयोजक दिवांश चोरडिया व हर्ष सिंघी थे। विजेताओं को तेयुप द्वारा पुरस्कृत किया गया। प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार भी दिया गया।

पंचरंगी तप अभिनंदन समारोह

जवाहर नगर। साध्वी मधुस्मिता जी के सान्निध्य में पंचरंगी तप अभिनंदन समारोह का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। जवाहर नगर महिला मंडल द्वारा भावपूर्ण गीतिका संगान प्रस्तुत किया गया। राजकुमार बरड़िया ने सुंदर गीतिका का संगान कर सबका मन मोह लिया। साध्वी मधुस्मिता जी ने तपस्वियों को तप में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हुए गीत का संगान किया। वर्षीतप तपस्वी भाई का विशेष सम्मान किया गया। राजेन्द्र मुसल, नितिन दुगड़, राजेन्द्र पंसारी, ओमप्रकाश जैन आदि गणमान्य जन की गरिमामयी उपस्थिति रही।

तप समाचार

बालोतरा। साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में गीता श्रीश्रीमाल ने चौदह, कंचन चौपड़ा ने ग्यारह, टीपीएफ अध्यक्ष रमेश भंसाली, रेखा भंसाली, अमित संकलेचा ने आठ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

चमत्कारिक स्तोत्र भक्तामर का अनुष्ठान

धूरी-पंजाब।

साध्वी कनकरेखाजी के सान्निध्य में, तेरापंथ सभा धूरी के तत्वावधान में 'भक्तामर – एक चमत्कारिक स्तोत्र' कार्यशाला का आयोजन किया गया। परमेष्ठि स्तुति के साथ कार्यक्रम का मंगलाचरण हुआ।

साध्वी कनकरेखाजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि भक्तामर स्तोत्र की स्तुति वास्तव में एक चमत्कारिक रहस्य है। इस रहस्य को प्राप्त करने के लिए गहरी श्रद्धा एवं समर्पण के साथ साधना करनी चाहिए। आज की तनावभरी जिंदगी में इंसान की जीवनशैली अस्त-व्यस्त हो गई है, इसे स्वस्थ बनाने के लिए इष्ट-स्तुति का प्रारंभ करें। सर्वविघ्नबाधानाशक और सर्वसिद्धिदायक यह स्तोत्र अत्यंत प्रभावशाली है। इसका प्रत्येक श्लोक अलग-अलग चमत्कारिक प्रभाव रखता है। साध्वीश्री ने सत्य घटनाओं का उल्लेख करते हुए अनेक श्लोकों के लाभ बताए।

साध्वी हेमंतप्रभाजी और साध्वी संवरविभाजी ने भक्तामर अनुष्ठान से परिषद को भावविभोर कर दिया। ज्ञानशाला के बच्चों ने एक्शन के साथ भक्तामर स्तोत्र की सुंदर झांकी प्रस्तुत की, जिससे परिषद आनंदित हो उठी। सभाध्यक्ष भीमसेन ने स्वागत भाषण के साथ अपने विचार रखे।

इस शानदार कार्यक्रम में धूरी, मलेरकोटला, अहमदगढ़, शेरपुर और श्रीडूंगरगढ़ से प्रतिनिधियों ने सहभागिता की। भव्य प्रस्तुति और भव्य आयोजन में सभा, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल और ज्ञानशाला का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी गुणप्रेक्षाजी ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह

केसिंगा। समणी डॉ. ज्योतिप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, केसिंगा में महिला मंडल की निवर्तमान अध्यक्षा अंकिता जैन ने नव-निर्वाचित अध्यक्षा रश्मि को शपथ ग्रहण करवाया। तत्पश्चात नव-निर्वाचित अध्यक्षा रश्मि ने अपनी मंत्री नीलम जैन तथा पूरी टीम की घोषणा की और सभी को शपथ दिलाई। तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा विजय गीत के साथ शपथ ग्रहण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। निवर्तमान अध्यक्ष विकास जैन ने नव-निर्वाचित अध्यक्ष अरुण जैन को शपथ दिलाई। इसके बाद अरुण जैन ने अपनी टीम की घोषणा की और सभी को शपथ दिलाई। मंत्री के रूप में अभिषेक जैन, उपाध्यक्ष प्रथम – राजकुमार जैन, उपाध्यक्ष द्वितीय – सुजीत जैन, सह मंत्री प्रथम – योगेश जैन, सह मंत्री द्वितीय – प्रिंस जैन, संगठन मंत्री – मुदित जैन, कोषाध्यक्ष – राहुल जैन, मीडिया प्रभारी – कुलदीप जैन एवं किशोर मंडल प्रभारी – सुरेंद्र जैन के नामों के साथ पूरी कार्यकारिणी, संयोजक एवं सलाहकारों की सूची घोषित की गई। केसिंगा सभा के मंत्री नंदकिशोर जैन ने नव-निर्वाचित अध्यक्ष एवं मंत्री को बैज पहनाकर उनका उत्साहवर्धन किया। अंत में सभी ने समणी जी से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। समणी मानसप्रज्ञा जी ने कहा कि हमें अपने सभी दुर्गुणों का विसर्जन और नाश करना चाहिए तथा स्वयं को गुरु भक्ति में लीन करना चाहिए। समणी डॉ. ज्योतिप्रज्ञा जी ने सभी से कम से कम एक घंटा रात्रि में प्रवचन में आने का संकल्प करवाया। उन्होंने कहा कि तेरापंथ युवक परिषद् एवं महिला मंडल दोनों ही सशक्त संगठन हैं, जो सेवा, संस्कार और संगठन के तीन आयामों के साथ संघ भक्ति का परिचय देते हैं, और अपनी ऊर्जा से संघ को आगे बढ़ाते रहें। इस अवसर पर काटाबाजी महिला मंडल, युवक परिषद् बांगोमुंडा, महिला मंडल एवं युवक परिषद् सिंधीकेला ने भी समणी डॉ. ज्योतिप्रज्ञा जी के सान्निध्य में शपथ ग्रहण कर आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथ युवक परिषद् के मंत्री अभिषेक जैन ने किया।

नागपुर। तेरापंथ महिला मंडल नागपुर की नवगठित कार्यकारिणी (वर्ष 2025-2027) टीम का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि द्वारा अणुव्रत भवन में विधिवत सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुई। जैन संस्कारक आनंदमल सेठिया एवं जतन मालू ने विधि अनुसार मन्त्रों के उच्चारण के साथ शपथ ग्रहण समारोह की प्रक्रिया सम्पन्न करवाई। तत्पश्चात पूर्व अध्यक्षा ने नव-मनोनीत अध्यक्षा को शपथ दिलवाई। नव-मनोनीत अध्यक्षा प्रमिला मालू ने अपनी नई कार्यकारिणी के सदस्यों के नाम घोषित किए एवं उन्हें शपथ दिलवाई। सभी सदस्यों का तिलक लगाकर एवं बैज पहनाकर स्वागत किया गया। मंडल की परामर्शक बहनों ने थाली बजाकर नई टीम का अभिनंदन किया। युवती बहनों ने बधाई गीत गाकर नई टीम का वर्धापन किया। प्रेमलता सेठिया ने कविता के माध्यम से सभी पदाधिकारियों के प्रति अपने सुंदर भाव व्यक्त किए। भारती बाबेल ने भी नई टीम को बधाई दी। तेरापंथ सभा अध्यक्ष विजय रांका, सरिता आर. डागा एवं तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा प्रमिला मालू ने टीम को शुभकामनाएं और बधाई देते हुए कहा कि सभी का साथ और विश्वास इसी प्रकार बना रहे। कार्यक्रम में श्रावक समाज की गरिमामय उपस्थिति रही। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष नितेश छाजेड ने नई टीम को बधाई देते हुए जैन संस्कार विधि से शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए आभार व्यक्त किया। महावीर स्वामी की आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रियंका आंचलिया ने किया तथा आभार तेरापंथ महिला मंडल मंत्री सुमन मालू ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में बहनों की उत्कृष्ट उपस्थिति रही और सभी के सहयोग से कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

सामाजिक सेवा कार्य

जसोल। जसोल के पारसमल गोलेच्छा जैन परिवार ने स्थानीय राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अमरपुरा जसोल के विद्यालय एवं विद्यार्थीयों के हितार्थ आटोमेटिक स्कूल बेल टाईमर विद आहुजा एम्प्लीफायर सैट अणुव्रत समिति जसोल के प्रभारी भूपतराज कोठारी, अध्यक्ष महावीर सालेचा की प्रेरणा से भेंट किया। प्रधानाचार्य सरोज भाटी ने गोलेच्छा परिवार का सम्मान किया। भूपतराज कोठारी व अध्यक्ष महावीर सालेचा ने विद्यार्थियों को पर्यावरण सुरक्षा संवर्धन एवं संरक्षण का संकल्प दिलाया तथा अधिकाधिक वृक्षारोपण करने हेतु प्रोत्साहित किया। वृक्षारोपण कार्यक्रम प्रभारी प्रताप सिंह राव ने प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा किये गये वृक्षारोपण कार्य से अतिथियों को अवगत करवाया तथा वृक्ष मित्र पुरस्कार की जानकारी दी।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नामकरण संस्कार

■ **गुवाहाटी।** तितरी जोधयासी निवासी पुखराज - सुन्दर देवी नाहर की सुपौत्री एवं विकास - दीक्षा नाहर की सुपुत्री का नामकरण संस्कारक अशोक मालू, बजरंग डोसी एवं छतरसिंह चौरड़िया ने विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित कराया।

■ **छापर।** सूरत प्रवासी पंकज नाहटा के सुपुत्र अक्षय-प्रियांशा नाहटा के पुत्ररत्न का जन्म सूरत में हुआ। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, मनीष मालू, बजरंग बैद, पवन बुच्चा, विनीत सामसुखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानंद संपन्न करवाया गया।

दीक्षार्थी मंगल भावना समारोह

पल्लावरम।

तेरापंथ भवन में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में, गांधीनगर (गुजरात) में आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा दीक्षित होने जा रहे प्रीत कोठारी के मंगल भावना समारोह का आयोजन तेरापंथी सभा पल्लावरम द्वारा किया गया।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा— 'प्रीत ने संयम से प्रीत लगाई है। समता और सहजता के साथ व्यक्ति वैराग्य के पथ पर आगे बढ़ सकता है। जिसमें तीव्र मुमुक्षा होती है, वही संयमी बनता है। 'संयमः खलु जीवनम्' उसका आदर्श होता है।

संयम के पथ पर बढ़ने वालों के जीवन में सहनशीलता, पवित्रता और विनम्रता का विकास आवश्यक है।'

दीक्षार्थी को प्रेरित करते हुए उन्होंने कहा— 'जिस श्रद्धा और उच्च भावों से तुम दीक्षित हो रहे हो, उसी भाव से आगे भी बढ़ते रहना। सौभाग्य है कि तुम्हें ऐसा धर्म संघ और ऐसे गुरु प्राप्त हुए हैं। गुरु दृष्टि के अनुसार सदैव चलना।'

मुनि काव्य कुमार जी ने संचालन करते हुए कहा— 'मुझे प्रसन्नता है कि मेरे संसार पक्षीय होमटाउन बेंगलुरु का भाई प्रीत कोठारी दीक्षा लेने जा रहा है।

माता-पिता साधुवाद के पात्र हैं, जो अपने इकलौते पुत्र को संघ को सौंप रहे हैं।'

कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल की महिलाओं ने गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष दिलीप संसाली ने स्वागत करते हुए दीक्षार्थी के प्रति मंगल भावना व्यक्त की। महिला मंडल अध्यक्षा लता गिड़िया ने भावाभिव्यक्ति दी और आशा कोठारी ने गीत प्रस्तुत किया।

दीक्षार्थी प्रीत के पिता नरेश कोठारी ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। वहीं, दीक्षार्थी प्रीत कोठारी ने अपने सौभाग्य की सराहना करते हुए कहा— 'मुझे ऐसा धर्म शासन और ऐसे धर्म गुरु प्राप्त हुए, जिनकी शरण में मैं अपने जन्मों की भव-परंपरा को संपन्न कर सिद्धश्री को प्राप्त कर सकूं।'

अंत में, तेरापंथी सभा और तेरापंथ महिला मंडल पल्लावरम की ओर से दीक्षार्थी प्रीत कोठारी का साहित्य आदि के माध्यम से अभिनंदन किया गया।

लॉ, लॉजिक एंड लाइफ कार्यशाला का हुआ आयोजन

विजयनगर।

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, विजयनगर में तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल विजयनगर द्वारा 'लॉ, लॉजिक एंड लाइफ – सफलता के 7 मंत्र' कार्यशाला का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री के मंगल पाठ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेयुप अध्यक्ष विकास बाँठिया ने सभी का स्वागत किया। मुख्य वक्ता, मुंबई से पधारे एडवोकेट ललित जैन का परिचय किशोर मंडल सह-संयोजक प्रिंस मांडोत ने दिया।

मुख्य वक्ता एडवोकेट ललित जैन ने किशोर मंडल एवं कन्या मंडल को संबोधित करते हुए जीवन में सफलता के लिए सात मंत्र – स्टिल, विल, स्किल, ड्रिल, थ्रिल, चिल और गुडविल – के बारे में विस्तार से बताया तथा सभी की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया।

साध्वी संयमलता जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जीवन में तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं – पहले, जो कार्य नहीं करते; दूसरे, जो कार्य करते हैं लेकिन छोटी-सी रुकावट आने पर बीच में ही छोड़ देते हैं; और तीसरे, जो कार्य लेते हैं और हर बाधा को पार करते हुए अंत तक उसे पूरा करते हैं तथा सफल होते हैं। उन्होंने कहा कि हमें भी अपने जीवन में हर कार्य को पूर्ण करना चाहिए, अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए।

इस अवसर पर सभा विजयनगर के मंत्री दिनेश हिंगड़, तेयुप प्रबंध मंडल से योगेश पोरवाड़, पीयूष ललवानी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के साउथ ज़ोन अध्यक्ष विक्रम कोठारी, तेयुप पूर्व अध्यक्ष राकेश दूधोड़िया, कन्या मंडल संयोजिका व सह-संयोजिका खुशी मांडोत तथा श्रावक समाज की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन संयोजक दर्शन बाबेल ने किया एवं आभार ज्ञापन सह-संयोजक रिदम चावत ने प्रस्तुत किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
18 अगस्त - 24 अगस्त, 2025
हे प्रभो! यह तेरापंथ

'सुदीर्घजीवी' 'शासनश्री' साध्वी बिदामांजी के प्रयाण पर चारित्रात्माओं के उद्गार

तेरापंथ धर्मसंघ की अद्वितीय साध्वी बिदामां जी

● साध्वी उज्ज्वलरेखा ●

इस दुनिया के गुलशन में अनेकों पुष्प खिलते हैं और मुरझा जाते हैं। कुछ पुष्प ऐसे होते हैं, जो अपनी सौरभ से समूचे संसार को महका देते हैं। जन्म और जीवन उसी का सार्थक होता है, जो अपने ज्योतिर्मय जीवन से समूचे विश्व को आलोकित कर देता है। सुदीर्घजीवी शासनश्री साध्वी बिदामां जी (छापली, पींपली) जिन्होंने अपने जीवन को अनेकों गुणों से सजाया एवं संवारा। उन्होंने दीर्घायु का वरदान प्राप्त कर धर्मसंघ में नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया। आचार्य श्री महाश्रमण युग में 107वें वर्ष में पहुंचकर पूज्यप्रवर द्वारा प्राप्त आशीर्वचन को सार्थक बनाया।

दीर्घायु का वरदान

सन् 2012 का आचार्य श्री महाश्रमण जी का चातुर्मास जसोल में था। उन दिनों हमारा चातुर्मास्य भी गुरुकुलवास में था। साध्वी बिदामां जी को पूज्यप्रवर प्रायः प्रतिदिन ही दर्शन दिलाने पधारते थे। एक दिन पूज्यप्रवर साध्वी वैराग्यश्री जी को संथारे का प्रत्याख्यान करवाकर पुनः लौटते हुए साध्वी बिदामां जी को दर्शन देने पधारे। पूज्यप्रवर कुर्सी पर आसीन हुए। साध्वी बिदामां जी की सुख-पृच्छा की। वापिस पधारने लगे, उस वक्त साध्वी बिदामां जी ने निवेदन करते हुए कहा — 'गुरुदेव, मेरा भी वो दिन धन्य होगा, जिस दिन मैं भी इसी प्रकार संथारे करके आप श्री के चरणों में नैया पार करूं।' तत्काल गुरुदेव ने फरमाया — 'तुम अभी तपो-तपो, जल्दी मत करो।' समीपस्थ मुनि पानमल जी खड़े थे, उन्होंने फरमाया — 'बिदामां जी, आपको सौ वर्षों तक तो जीना ही होगा, क्योंकि गुरुदेव की वचनसिद्धि है।' उस समय आपकी 94 वर्ष की आयु थी। गुरुदेव की वचनसिद्धि ने ही आपको उम्र के 107वें वर्ष की यात्रा करवा दी।

स्वाध्याय ही औषध

साध्वी बिदामां जी सरेवड़ी जैसे छोटे से गांव में जन्मी थी। उस जमाने में लड़कियों को शिक्षा नहीं दिलाई जाती थी। अनपढ़ होते हुए भी साध्वी बिदामां जी की स्मरण-शक्ति बेजोड़ थी। पढ़ने की ललक हर समय रहती थी। दीक्षित होने के पश्चात साध्वी बख्तावर जी के ग्रुप में रहती हुई, उनके द्वारा अक्षर-ज्ञान प्राप्त कर आगे बढ़ती गई। रामायण जैसे व्याख्यान को कंठस्थ कर लिया और रात्रिकालीन प्रवचन कर देती थी। आप जब मेवाड़ के गांवों में व्याख्यान फरमाती, उस समय मेवाड़ी श्रावक बोल उठते — 'देखो रे, देखो रोडी में (कचरे का ढेर) में रतन पैदा हुआ है।' आप तीव्र बुद्धि वाली साध्वी थी। दैनंदिन कार्यों से निवृत्त होते ही आप पुस्तकों का पठन करती रहती थी। उम्र के 102 वर्ष तक स्वयंपाठी थी, तत्पश्चात साध्वियों द्वारा सुनाया जाता रहा। उन्होंने अपने स्वाध्याय को ही अपने जीवन की औषध बना रखा था। उन्हें यावज्जीवन किसी भी प्रकार की दवा लेने का त्याग था। जब कभी भी जी घबराता, बस एक ही काम बोलते — 'मुझे कुछ सुना दो, मेरा जीसोरा हो जाएगा।' जब साध्वियां चौबीसी, आराधना आदि सुनातीं, कितनी भी वेदना होती, स्वाध्याय सुनते ही उनकी वेदना शांत हो जाती थी। देवलोकगमन के पूर्व 10-12 दिनों तक उनके अत्यधिक वेदनीय कर्म उदय में आए। चार-पांच दिन तो ऐसे लग रहा था जैसे वेदनीय और आयुष्य, दोनों में संघर्ष चल रहा है।

समता की मूरत

अनंत वेदना के अंदर भी समता का अजस्र स्रोत बह रहा था। उनके मुंह से कभी 'उफ' नहीं निकलता। वेदना में भी चिंतन बहुत सकारात्मक रहता था। कई बार फरमाते — 'क्या पता इस समय ही सारे वेदनीय कर्म कैसे उदय में आ गए। उम्र के इतने लंबे पड़ाव में भी ऐसी वेदना कभी नहीं आई। इस वृद्धावस्था में एक साथ तीव्र वेदनीय कर्म उदय में किस जन्म के आए हैं। खैर! भोगना तो है ही, हंसते-हंसते भोगूंगी।'

सामंजस्य की कला

सुदीर्घजीवी शासनश्री साध्वी बिदामां जी में सामंजस्य की कला बेजोड़ थी। कैसे भी स्वभाव की साध्वी ग्रुप में आ जाए, उसे परोटने का अच्छा तरीका था। उन्हें दीक्षा के तीन महीनों पश्चात गुरुदेव श्री तुलसी ने साध्वी बख्तावर (डालगणी से दीक्षित) के साथ भेज दिया गया। साध्वी बिदामां जी एवं स्व. साध्वी भीखाजी (काकी-जेठूती) 16 वर्षों तक उनके साथ रही। तत्पश्चात साध्वी बख्तावर जी का देहावसान हो गया।

गणाधिपति गुरुदेव ने साध्वी आनंदकुमारी जी 'मोमासर' को साध्वी बख्तावर जी की चारों साध्वियों के लिए नया ग्रुप लीडर बना दिया। लगभग 25 वर्षों तक उनके ग्रुप में रहीं। जब उनका देहावसान हो गया, मेरा ग्रुप बना दिया। 6 वर्षों से उसी ग्रुप में थी। इस प्रकार वे 84 वर्षों के संयम पर्याय में एक ही ग्रुप में रही। मेरे ग्रुप में 35 वर्ष हो गए। साध्वी बिदामां जी और मेरा 42 वर्षों से सहवास रहा है — तीन-तीन आचार्यों द्वारा दीक्षित, तीन अग्रगण्यों का साथ। कई बार ग्रुप में अन्य स्वभाव वाली साध्वी आ ही जाती, तो साध्वी बिदामां जी उसका बहुत अच्छा ध्यान रखतीं और उस साध्वी को बहुत अपनत्व भाव देती थी। प्रसंगवश गणाधिपति गुरुदेव ने एक बार शासनमाता से फरमाया — 'देखो, साध्वी बिदामां जी बहुत सामंजस्य बैठाने वाली साध्वी है। ऐसी एक-एक साध्वी हर ग्रुप में हो जाए, तो हमारी आधी समस्या का समाधान हो जाएगा।'

गुरुकृपा

आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा भी समय-समय पर उन पर कृपामृत बरसाया जाता रहा। आचार्य श्री महाश्रमण जी की जो अनुकंपा रही, उसको शब्दों में बयां करना मुश्किल है। साध्वी बिदामां जी जब 104वें वर्ष से गुजर रही थी, उस समय कालू में पूज्यप्रवर का पदार्पण हुआ। दो दिनों के प्रवास में तीन समय घंटों-घंटों सेवा करवाई। अमृतपत्र, अमृतग्रास बकसाते वक्त पूज्यप्रवर ने फरमाया — 'देखो, ग्रास लेने वाला बैठा है, देने वाला खड़ा है।' अगले दिन 16 कि.मी. का विहार था। साध्वी प्रमुखा श्री जी एवं हम सब साध्वियों ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया — 'भगवन, कल प्रातः हम साध्वी बिदामां जी को पंचायत भवन में दर्शनार्थ ले आएंगे, वहां आप श्री के दर्शन करवा देंगे।' 23 मई 2022 का वो समय अत्यधिक उष्णता लिए हुए था। सूर्य का तापमान 40 डिग्री के आसपास चल रहा था।

हमने सोचा, पूज्यप्रवर को इतने लंबे विहार में देर न हो। किन्तु जब हम लोगों ने सतियों के ठिकाने न पधारने का निवेदन किया, तत्काल दो क्षण चिंतन कर पूज्यप्रवर ने फरमाया — 'देखो, ये साध्वियां कितनी सेवा कर रही है, अब इतनी सेवा हम ही करेंगे। इनको नहीं लाना, हम ही यहां आएंगे।' सुनने वाले अचंभित थे। प्रातः विहार के समय जब पधारे, तब भी लगभग आधे घंटे से भी अधिक निश्चिंतता पूर्वक सेवा करवाई। मंगलपाठ व पत्र, दोनों चीज पूज्यप्रवर ने पास खड़े होकर सुनाई। आचार्य महाश्रमण जी का अनहद कृपाभाव रहा है। समय-समय पर आप प्रवचन में साध्वी बिदामां जी का नामोल्लेख करवाते रहे हैं, संभावना यही है कि आगे भी करवाते रहेंगे।

शासनमाता की कृपा-दृष्टि भी बहुत रही है। साध्वी बिदामां जी को साहित्य-पठन की अत्यधिक रुचि थी। जब भी हम गुरुकुलवास में होते, उस वक्त उनके लिए शासनमाता पत्र, पत्रिकाएं, विज्ञप्ति आदि अपने पास उन्हें देने के लिए विशेष रूप से अलग रखते थे। 'मेरा जीवन, मेरा दर्शन' पुस्तकें शासनमाता से लेकर पढ़ती। जब वे सम्पन्न हो जातीं, आगे की मांगती, तब शासनमाता फरमाते कि — 'बिदामां जी महासतियां जी, जब और छपेगी, तब आपको देंगे।' ये थी उनके ऊपर गुरुओं का अनहद कृपाभाव।

साध्वी बिदामां जी की जीवन-गाथा कितनी भी गाएं, फिर भी वो अधूरी ही रहेगी। वो एक निडर, सरलमना, व्यवहार-कुशल, आचारनिष्ठ, आज्ञानिष्ठ, मर्यादानिष्ठ साध्वी थी। साध्वी श्री बिदामां तेरापंथ धर्मसंघ में नव-इतिहास रचकर अमर हो गई।

उनका जीवन निर्लिप्त, निस्वार्थ, निस्पृह था। वाणी की मधुरता, हृदय-कोमलता व करुणा से ओतप्रोत था। उन्होंने हर क्षण जागरूक जीवन जिया। प्रतिक्रमण, प्रतिलेखन, प्रत्याख्यान — इन सब कार्यों में पूर्ण सजगता रखती थी। हर समय माला हाथ में रहती। हजारों-हजारों लोग उनके दर्शनार्थ आते रहते। कई बार एक दिन में पांच-सात बार भी लोगों को मंगलपाठ सुनाना पड़े, तो भी वो अघाति नहीं थी। उनकी सोच निराली थी, चिंतन गंभीर था। ऐसी दिव्य मूर्ति, पुण्यात्मा को सादर श्रद्धार्पण।

स्वाध्याय प्रेमी साध्वी बिदामां जी

● साध्वी हेमप्रभा ●

तप के बारह भेद में एक भेद है - स्वाध्याय। स्वाध्याय कर्म-निर्जरा का महान हेतु है। सुदीर्घजीवी शासनश्री साध्वी बिदामांजी भी स्वाध्याय-प्रेमी साध्वी थी।

लगभग 102 वर्ष की उम्र तक दिन में स्वयं पुस्तकें पढ़ती। मुझे साध्वी श्री जी के सान्निध्य में रहते लगभग 13 वर्ष हो गए और इन 13 वर्षों में मैंने अनुभव किया कि स्वाध्याय उनके लिए भोजन और औषध, सबकी पूर्ति कर देता। स्वाध्याय के द्वारा ही वे तृप्ति और स्वस्थता का अनुभव करती थी। मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानती हूं कि मुझे आपको 'मेरा जीवन, मेरा दर्शन' के 25 भाग और अन्य अनेक पुस्तकों को सुनाने का अवसर मिला।

आहार के बाद प्रतिदिन वे पूछने लग जातीं — 'तू दोपहर में स्वाध्याय सुनाने आएगी ना?' और जब किसी कार्यवश मना करती तो कहतीं — 'थोड़ी देर ही सुना देना, पर आना जरूर।' स्वाध्याय में उन्हें बड़ा ही आनंद मिलता और वे कहतीं — 'तुम जब मुझे कुछ सुनाती हो तो मेरा टाइम अच्छा बीतता है।' कभी दूसरी साध्वियां भी सुनातीं तो भी मुझसे पूछतीं — 'तू क्यों नहीं आई? तुम आ जाया करो, क्योंकि तुम सुनाती हो तो मुझे अच्छा लगता है।'

मुझे उनके जीवन के अंतिम समय तक उन्हें 'आराधना' आदि सुनाने का सुंदर अवसर प्राप्त हुआ। अंतिम दिन तक अत्यधिक वेदना होने पर भी समता से स्वाध्याय श्रवण किया। आप मुझ पर असीम वात्सल्य बरसाती रहीं, जो मेरे जीवन के लिए अविस्मरणीय है। मैं आपको कभी भी भूल नहीं सकती। भले ही आप विलीन हो गई हैं, लेकिन भावों में, मेरे स्मृति-पटल पर आप सदैव अमर रहेंगी।

आपकी स्वाध्याय-प्रियता, गुरु-निष्ठा, संघ-निष्ठा, कार्य-निष्ठा और आत्म-निष्ठा आदि आपकी दुर्लभ विशेषताएं मुझमें भी संक्रमित होती रहें। आपकी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करती हूं — आप अतिशीघ्र मोक्षश्री का वरण करें। स्वाध्याय-प्रिय साधिका को मेरा नमन।

‘सुदीर्घजीवी’ ‘शासनश्री’ साध्वी बिदामांजी के प्रयाण पर चारित्रात्माओं के उद्गार

नव इतिहास रचाया

● साध्वी कनकरेखा ●

साध्वी बिदामा शासनश्रीजी जीवन धन्य बनाया।
दशक ग्यारहवें में अनशन कर गण का सुयश बढाया।
बोलो अनशन की जयकार, बोलो जिनशासन जयकार।।

1. गुरूवर तुलसी करकमलों से तुमने दीक्षा पाई,
चारित्रिक निर्मलता तेरी सबको खूब सुहाई।
भैक्षव शासन के गौरव को शिखरों सदा चढ़ाया।।

2. सहज-सरलता जागरूकता सेवा का गुण भारी,
मृदुभाषी स्वाध्याय शीलता गण-गणपति इकतारी।
सुदीर्घजीवी शासनश्रीजी कीर्ति ध्वज फहराया।।

3. श्रद्धा, विनय, समर्पण से त्रय गुरूवर साया-पाया,
ऋजुता, मृदुता, वत्सलता से सबका मन है लुभाया।
सात शताधिक वर्ष सुहाने नव इतिहास रचाया।।

4. शांत स्वभावी उज्जवलप्रभाजी, सतियां सेवाभावी,
स्वावलंबी समता की मूरत साध्वी बिदामांजी।
श्रद्धालु श्रावक कालु के तीर्थधाम सुहाया।।

लय - माईन माईन

सिद्ध हुआ सब काम

● साध्वी सुमनश्री ●

कैसी मजबूती धारी रे, कर दियो काम कमाल।
(थांरा) फल्या मनोरथ भारी रे, सिद्ध हुआ सब काम।।

1. जीवन नै घणो उजाल्यो, काया रो सार निकाल्यो,
अनशन केशर की क्यारी रे, सिद्ध हुआ सब काम।।

2. सती बिदामांजी रो, जीवन अणमोलो हीरो,
जीवन नैया थे तारी जी, सिद्ध हुआ सब काम।।

3. ई वय में जोश जगायो, अनशन रो कलश चढ़ायो,
आत्मा ने खूब संवारी रे, सिद्ध हुआ सब काम।।

4. उज्ज्वलरेखाजी पायो, स्वर्णिम अवसर मन भायो,
सेवा रा मेवा भारी रे, सिद्ध हुआ सब काम।।

5. थे गण में ख्यात बणाई, सुदीर्घजीविता पाई,
'शासन श्री' मंगलकारी रे, सिद्ध हुआ सब काम।।

6. तीन-तीन गुरूवां री, पाई ऊर्जा रिझवारी,
युग महाश्रमण जयकारी रे, सिद्ध हुआ सब काम।।

लय - कैसी वह कोमल काया रे

आप धन्य हो

● डॉ. साध्वी परमयशा ●
● आदि साध्वी वृंद ●

आप धन्य हो, कृतपुण्य हो। आप पवित्र हो, पावन हो।

सराहनीय था आपका मनोबल और आत्मबल।
अनुकरणीय था आपका संयमबल और अध्यात्मबल।
प्रशंसनीय था आपका तपोबल और आराधनाबल।

अनुमोदनीय थी आपकी सहजता और सरलता।
आचरणीय थी आपकी ऋजुता और मृदुता।

नवकार महामंत्र आपके रोम-रोम में बसा था।
ॐ भिक्षु नाम आपके कण-कण में विराजमान था।
आपका हर पल परमार्थ से परिपूर्ण था।
आपका हर दिन दिनमणि जैसा दीप्तिमान था।
आपका हर वर्ष विशेष, विशिष्ट और प्रेरणास्पद था।
आपका अदम्य आत्मविश्वास वाकई में बेमिसाल था।

भिक्षु शासन में आपने नाम कमाया, सुयश ध्वज फहराया।
महाव्रत, समिति, गुप्तियों की साधना से आपने जीवन को चमकाया।

आपने मेवाड़ का गौरव शिखरों तक चढ़ा दिया।
आपने कालू की गरिमा में चार चाँद लगा दिए।

आपके देवलोक गमन से शासन की ख्यात में विख्यात,
एक देदीप्यमान साध्वीश्री की कमी हो गई।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का आशीर्वाद, छत्र-छाँह,
कृपा और करुणा-वत्सलता आपको सदैव मिलती रही।
साध्वीश्री उज्जवलरेखाजी, साध्वी अमृतप्रभाजी
आदि ने सेवा-भावना का इतिहास बना दिया।

दिवंगत साध्वीश्री जी की आत्मा के कल्याण की मंगल कामना।

नव इतिहास बणायो

● साध्वी सरोजकुमारी ●

साध्वी नव इतिहास बणायो,
एक शतक रै ऊपर सात रो अनुपम अंक चढायो।
महाश्रमण गुरु कृपा स्यूं लंबो आयुष्य पायो।।

1. मेवाड धरा पर जन्म्या परण्या मेवाड़ी मान बढायो।
भारत ज्योति तुलसी गणी स्यूं संयम रत्न है पायो।
आनंदकुमारी जी रै योग स्यूं जीवन सफल बणायो।

2. सरल स्वभावी सेवाभावी सहज शांत हो जीवन।
शुभ भावां में रहया रात दिन पायो भैक्षव शासन।
सावन शुक्ला एकम रो दिन रात्रि संथारो पचखायो।।

3. उज्ज्वलरेखाजी अमृतप्रभा जी आदि सतियां सारी।
तन मन स्यूं सेवा साजी है खिलती गण फुलवारी।
'सरोज' कहै सौ सौ साधुवाद, गण गौरव महकायो।।

लय - संयममय जीवन हो

❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।

❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।

❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।

— आचार्य श्री महाश्रमण

लक्षित मंज़िल को पाया है

● साध्वी कल्पमाला ●

अनशन कर जीवन को तुमने चमकाया है,
चढ़ते भावों से लक्षित, मंज़िल को पाया है।।

1. सुदीर्घजीवी बिदामांजी, संघ का यश फैलाया है,
भिक्षु गण गौरव को तुमने शिखरों चढ़ाया है।
ऐसी साध्वी 'शासनश्री' को पाकर संघ मुस्काया है।।

2. गुरु तुलसी से ली दीक्षा, जीवन को चमकाया,
'शासनश्री' मोहनांजी संग दीक्षित, जीवन को सरसाया।
उज्ज्वलरेखा के संघ नव-इतिहास रचाया है।

3. भिक्षु का शासन पाया, तुलसी की छत्र-छाया,
महाप्रज्ञ अनुशासन में आगे कदम बढ़ाया।
गुरु महाश्रमण सन्निधि में लक्षित मंज़िल पाया है।।

4. मेवाड़ी धोरी थी तुम, गौरव से सीना फूले,
सेवा में पूर्ण समर्पण, खुशियों से हम झूले।
अंतिम समय तक जागरूकता देख,
मानस चकराया है।।

5. उज्ज्वलरेखा अरु सतियों को सेवा का योग मिला,
अनशन कर कालू में अंतिम मनोरथ का फूल खिला।
'शासनश्री' बसंतप्रभा जी,
श्रद्धा भावों का पुष्प चढ़ाया है।।

लय - होठों से छू लो तुम

इतिहास गण में रचकर

● साध्वी भास्करप्रभा ●

सुदीर्घजीवी स्वर्ग सिधारया, गावां मंगलकामना।
ओ पाल्यो संयम सांतरो, देवां शुभकामना।।

1. उतरयो देव विमान धरा पर, थांने लेवण आयो,
ओ मृत्यु मोच्छव थांरो ओ, नई प्रेरणा लायो।।

2. सिंह वृत्ति स्यूं संयम पाल्यो, संथारो चौविहार हो,
हो समता भाव स्यूं करग्या थे, आत्मोद्धार हो।।

3. जागरुकता पल-पल देखी, चढग्या श्रेणी भावां री,
मोह ममता छोड़ दीन्हि, सतियां और काया री।।

4. गुरुमुखी ही सदा रह्या थे, फलगी अंतिम साधना,
आत्मा रा कारज थे सारया, कर अंतिम आराधना।।

5. इतिहास गण में रचकर, चाल्या मुक्तिनगर रे द्वार,
थांरी सन्निधि में देख्यां म्हें कई होता चमत्कार।।

6. कालू रा भाग्य खिल्या जो, थारो पावस पायो,
धाम बणग्यो तेरापंथ रो, जन-जन दौड़्यो आयो।।

लय - म्हारे सांस- सांस में

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
18 अगस्त - 24 अगस्त, 2025

संबोधि

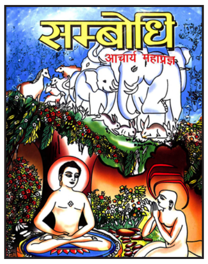

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

२०. जीवनस्य तृतीयेऽस्मिन्, भागे प्रायेण देहिनाम्।
आयुषो जायते बन्धः, शेषे तृतीयकल्पना।।

जीवों के जीवन के तीसरे भाग में नरक आदि आयु में से किसी एक आयु का बंधन होता है। जीवन के तीसरे भाग में आयु का बंधन न हुआ तो फिर तीसरे भाग के तीसरे भाग में आयु का बंधन होता है। उसमें भी बंधन न हुआ हो तो फिर अवशिष्ट के तीसरे भाग में आयु का बंधन होता है। इस प्रकार जो आयु शेष रहती है, उसके तीसरे भाग में आयु का बंधन होता है।

२१. तृतीयो नाम को भागो, नेति विज्ञालुमर्हसि।
सर्वदा भव शुद्धात्मा, तेन यास्यसि सद्गतिम्॥

जीवन का तीसरा भाग कौन-सा है, इसे तू जान नहीं सकता। इसलिए सर्वदा अपनी आत्मा को शुद्ध रख, इस प्रकार तू सद्गति को प्राप्त होगा।

जीवन ओस की बूंद की तरह है, कब गिर जाए यह पता नहीं है, इसलिए 'प्रमाद मत करो' यह आत्म-द्रष्टाओं का उद्घोष है। मनुष्य यह बुद्धि से जानता है, किन्तु जागरूक नहीं रहता। जापानी कवि 'ईशा' के संबंध में कहा जाता है-बत्तीस, तेतीस वर्ष की उम्र में उसके परिवार के पांच सदस्य पत्नी, बच्चे मर गए। बड़ा दुःखी हो गया। कहीं शांति नहीं मिली। किसी व्यक्ति ने उसे संत के पास भेज दिया। आया। संत ने कहा- 'आंख खोलकर देखो', 'जीवन ओस की बूंद की तरह है, अब गया, तब गया। सबको जाना है।' शांति मिली। एक कविता लिखी निश्चित ही जीवन एक ओस का कण है। मैं पूर्णतया सहमत हूं कि जीवन एक ओस का कण है। फिर भी यह आशा नहीं छूटती। सब देख लेने, जान लेने के बाद भी आदमी भविष्य की कल्पनाओं में जीने लगता है। वर्तमान को छोड़ देता है। महावीर कहते हैं– गौतम! शांति का सूत्र है– जागरूकतापूर्वक जीना।

जागरूक व्यक्ति प्रमत्त नहीं होता। वह प्रत्येक क्षण शुभ भावना से भावित रहता है। इसलिए उसे मृत्यु का भय नहीं रहता। मृत्यु कभी आए, उसका भविष्य सुरक्षित है। किन्तु जो प्रमत्त हैं, खतरा उन्हीं के लिए है। वे अशुभ भावों से घिरे रहते हैं। वे हिंसा, झूठ, ईर्ष्या, द्वेष, राग, कलह आदि से मुक्त नहीं होते। इन स्थितियों में वर्तमान और भविष्य दोनों सुखद नहीं होते। जैसे भावों में व्यक्ति मरता है वह वैसी ही गति में उत्पन्न होता है। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री महताबकंवरजी (किशनगढ़) दीक्षा क्रमांक 145

साध्वीश्री बड़ी तपस्विनी साध्वी थी। ख्यात में उनकी तपस्या का विवरण इस प्रकार है– उपवास, बेले, तेले बहुत बार किये।

4/14, 5/4, 6/3, 7/2, 8/1, 9/1, 10/1, 11/1, 12/1, 13/1, 14/2, 15/1, 21/1

एक बार तीर्थंकरों की ओली (लड़ी) की। जिसमें ऋषभदेव भगवान का एक उपवास फिर क्रमशः बढ़ाते हुए भगवान महावीर के 24 उपवास किए जाते हैं। कुल 300 उपवास होते हैं।

एक बार वर्षीतप भी किया। वैशाख शुक्ला 3 से तीसरे वर्ष की शुक्ला 3 तक एकान्तर रूप में 300 उपवास किए।

– साभारः शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

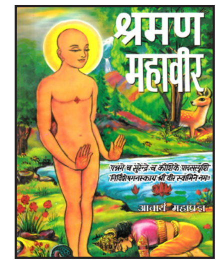

क्रान्ति का सिंहनाद

'वह सोचे-क्या परदत्तभोजी श्रमण को गोत्र-मद करने का अधिकार है?'

'वह सोचे-क्या उसे जाति और गोत्र त्राण दे सकते हैं या विद्या और चरित्र ?'२

२. एक निर्ग्रन्थ ने पूछा- 'तो भंते ! हमारा कोई गोत्र नहीं है?'

'सर्वथा नहीं।'

'भंते ! यह कैसे ?'

'तुम्हारा ध्येय क्या है?'

'भंते ! मुक्ति ।'

'वहां तुम्हारा कौन-सा गोत्र होगा?'

'भंते ! वह अगोत्र है।'

'सगोत्र अगोत्र में प्रवेश नहीं पा सकता। इसलिए मैं कहता हूं-तुम अगोत्र हो, गोत्रातीत हो।'

भगवान् ने निर्ग्रन्थों को सम्बोधित कर कहा- 'आर्यो! निर्ग्रन्थ को प्रज्ञा, तप, गोत्र और आजीविका का मद नहीं करना चाहिए। जो इनका मद नहीं करता, वही सब गोत्रों से अतीत होकर अगोत्र-गति (मोक्ष) को प्राप्त होता है।

३. भगवान् के संघ में सब गोत्रों के व्यक्ति थे। सब गोत्रों के व्यक्ति उनके सम्पर्क में आते थे। उस समय नाम और गोत्र से सम्बोधित करने की प्रथा थी। उच्च गोत्र से सम्बोधित होने वालों का अहं जागृत होता। नीच गोत्र से सम्बोधित व्यक्तियों में हीन भावना उत्पन्न होती। अहं और हीनता- ये दोनों विषमता के कीर्ति स्तम्भ हैं। भगवान् को इनका अस्तित्व पसन्द नहीं था। भगवान् ने एक बार निर्ग्रन्थों को बुलाकर कहा, 'आर्यो! मेरी आज्ञा है कि कोई निर्ग्रन्थ किसी को गोत्र से सम्बोधित न करे।'

४. जैसे-जैसे भगवान् का समता का आन्दोलन बल पकड़ता गया, वैसे-वैसे जातीयता के जहरीले दांत काटने को आकुल होते गए। विषमता के रंगमंच पर नए-नए अभिनय शुरू हुए। ईश्वरीय सत्ता की दुहाई से समता के स्वर को क्षीण करने का प्रयत्न होने लगा।

इधर मानवीय सत्ता के समर्थक सभी श्रमण सक्रिय हो गए। भगवान् बुद्ध का स्वर भी पूरी शक्ति से गूंजने लगा। श्रमणों का स्वर विषमता से व्यथित मानस को वर्षा की पहली फुहार जैसा लगा। इसका स्वागत उच्च गोत्रीय लोगों ने भी किया। क्षत्रिय इस आन्दोलन में पहले से ही सम्मिलित थे। ब्राह्मण और वैश्य भी इसमें सम्मिलित होने लगे। यह धर्म का आन्दोलन एक अर्थ में जन आन्दोलन बन गया। इसे व्यापक स्तर पर चलाना भिक्षुओं का काम था। भगवान् बड़ी सतर्कता से उनके संस्कारों को मांजते गए। एक बार कुछ मुनियों में यह चर्चा चली कि मुनि होने पर शरीर नहीं छूटता, तब गोत्र कैसे छूट सकता है? यह बात भगवान् तक पहुंची। तब भगवान् ने मुनि-कुल को बुलाकर कहा, 'आर्यो! तुमने सर्प की केंचुली को देखा है?'

'हां, भंते! देखा है।'

'आर्यो ! तुम जानते हो, उससे क्या होता है?'

'भंते ! केंचुली आने पर सर्प अन्धा हो जाता है।'

'आर्यो! केंचुली के छूट जाने पर क्या होता है?'

'भंते ! वह देखने लग जाता है।'

'आर्यो! यह गोत्र मनुष्य के शरीर पर केंचुली है। इससे मनुष्य अन्धा हो जाता है। इसके छूटने पर ही वह देख सकता है। इसलिए मैं कहता हूं कि सर्प जैसे केंचुली को छोड़ देता है, वैसे ही मुनि गोत्र को छोड़ दे। वह गोत्र का मद न करे। किसी का तिरस्कार न करे।' (क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

लक्ष्मण रेखाएं

भगवान महावीर को परम्परा में आचार्य भिक्षु एक क्रांतिकारी आचार्य हुए। उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों से अनुभव किया कि साधुत्व को निर्मल रखने के लिए कुछ नवीन संघीय मर्यादाओं का निर्माण आवश्यक है।

उस समय पृथक्-पृथक् शिष्य बनाने की परम्परा थी। मूलतः यह परम्परा दोषपूर्ण नहीं थी। किन्तु लगता है कि कालान्तर में साधु-समाज ने शिष्य-सम्पदा को अपनी प्रतिष्ठा का मानदण्ड बना लिया। जो कोई साधु थोड़ा-सा विद्वान् बन जाता, उसका चिन्तन होता– मैं भी दीक्षाएं दूं अपने शिष्य बनाऊं। साधु-समाज की यह धारणा पुष्ट हो चुकी थी कि श्रावक-समाज में अगर अपना वर्चस्व स्थापित करना है तो येन-केन प्रकारेण शिष्य-वर्ग की संख्या-वृद्धि आवश्यक है।

इस चिन्तन के प्रवाह में योग्य-अयोग्य का परीक्षण गौण हो गया। यहां तक कि दीक्षार्थी के माता-पिता को किसी धनवान श्रावक के द्वारा रुपये दिलाकर खरीद लिया जाता। वह सेठ उस दीक्षार्थी का धर्म पिता बनकर आज्ञा दे देता और दीक्षा हो जाती। दीक्षा एक तरह की खरीददारी बन चुकी थी। दीक्षा लेने वाले के मन में वैराग्य है या नहीं, यह अन्वेषणा नगण्य और दीक्षा देना ही साधु-समाज का मुख्य ध्येय बन गया। परिणामस्वरूप साध्वाचार शिथिलता की ओर जाने लगा। यह सब देखकर आचार्य भिक्षु ने सोचा-बढ़ती हुई इस शिष्य-लोलुपता पर रोक नहीं लगाई गई तो साधु-समाज निस्तेज और शक्तिहीन बन जायेगा। इसलिए उन्होंने अपने धर्म-संघ में सापवाद यह मर्यादा निर्मित की कि कोई भी साधु-साध्वी अपने-अपने शिष्य-शिष्याएं न बनाएं। सब शिष्य एक आचार्य के होंगे।

दूसरा प्रश्न उपस्थित हुआ कि भावी आचार्य की नियुक्ति कौन करेगा? आचार्य भिक्षु ने सोचा-अगर चुनाव-प्रणाली स्थापित होगी तो गुटबन्दी और छिछली राजनीति साधु-समाज पर हावी हो जाएगी। हर साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविका सोचेगा कि धर्म संघ की बागडोर मेरे से नैकट्य रखने वाले साधु के हाथ में आए।

संघ का हर सदस्य अपनी व्यक्तिगत तुच्छ स्वार्थपूर्ति करनेवाले को आचार्य पद पर आरूढ़ करने का अवांछनीय प्रयास करेगा। वहां आत्म-साधना गौण हो जाएगी। साधना के क्षेत्र में ऐसा होना सर्वथा अकाम्य है। आचार्य भिक्षु ने इसका सीधा-सा रास्ता खोजा। उत्तराधिकारी का मनोनयन स्वयं वर्तमान आचार्य करेगा और धर्म संघ के हर सदस्य को वह सहर्ष शिरोधार्य करना होगा, फिर चाहे वह मनोनयन किसी के मनोनुकूल हो या नहीं।

संगठन का आधार : अनाग्रही वृति

संघबद्ध साधना अनेक व्यावहारिक समस्याओं का समाधान है तो अनेक समस्याओं का आश्रयस्थल भी बन सकती है। एक से दो का होना जहां पारस्परिक सहयोग की स्थिति का उत्पन्न करता है वहीं पारस्परिक कलह का कारण भी बन सकता है। संघ अनेक व्यक्तियों का समूह होता है। संघ के सहारे साधना का अच्छा विकास हो सकता है। संघ की महिमा में कहा गया है-

आसासो वीसासो, सीयधरो य होइ मा भाहि।
अम्मापितिसमाणो, संघो सरणं तु सव्वेसिं।।

संघ आश्वास है, विश्वास है। शीतगृह-वातानुकूलित गृह के समान है। ऐसे संघ से डरो मत। यह माता-पिता के तुल्य है और सब प्राणियों के लिए शरण है।

आणाजुत्तो संघो, सेसो पुण अट्ठिसंघाओ।

संघ वह है, जहां आज्ञा प्रमाण होती है। जहां आज्ञा का महत्त्व नहीं, वह संघ केवल हड्डियों का ढेर है।

जहिं नत्थि सारणा वारणा य, पडिचोयणा य गच्छम्मि।
सो उ अगच्छो गच्छो, संजमकामीण मोत्तव्वो।।

जिस गच्छ में सारणा-प्रेरणा और स्मृति कराना और वारणा- रोक-टोक नहीं हैं, वह गच्छ समुदाय होकर भी गच्छ नहीं है। संयम की साधना करने वाले पुरुष के लिए ऐसा गच्छ छोड़ने योग्य है।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु

abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अगस्त 2025
सप्ताह के विशेष दिन

27 अगस्त	29 अगस्त
भगवती संवत्सरी महापर्व	आचार्यश्री कालूगणी का 90वां महाप्रयाण दिवस

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री छोगालालजी (बोराणा) दीक्षा क्रमांक 388

तपस्या को आत्मशुद्धि का साधन मानकर आपने तप किया। आपके तप का विवरण इस प्रकार है– उपवास/1314, 2/53, 3/11, 4/16, 5/25 तप के कुलदिन 1642, जिनके 4 वर्ष 7 महीने 12 दिन होते है।

– साभार : शासन समुद्र –

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

महामना आचार्यश्री भिक्षु

तेरापथ गणिराज की, जन्म त्रि सदी आगाज,
निज भावों से अर्चना, करें प्रभु की आज।
भिक्षु को जानें सभी, पहचानें-मानें,
रचना से अर्पण करें, अंतर्मन आवाज।।

भिक्षु चेतना वर्ष पर आचार्य श्री भिक्षु के दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने का अनुपम अवसर

- आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी के इस ऐतिहासिक अवसर पर आपको आमंत्रण है – अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से तेरापंथ टाइम्स के विशेष अंकों का हिस्सा बनने का।
- आप अपनी मौलिक रचना हमें प्रेषित कर सकते हैं, जो लेख, गीत, कविता या अन्य किसी साहित्यिक विधा में हो सकती है।

रचना हेतु नियम

1. प्रत्येक रचनाकार से केवल एक रचना ही स्वीकार की जाएगी।
2. रचना का आधार आचार्य भिक्षु एवं उनका दर्शन हो।
3. लेख की अधिकतम सीमा लगभग 750 शब्दों तक सीमित हो।
4. गीत/कविता अधिकतम 5 पद्य अथवा 15 पंक्तियों तक ही सीमित रहें।
5. प्राप्त रचनाओं का प्रकाशन भिक्षु चेतना वर्ष के दौरान कभी भी किया जा सकता है।
6. रचना के प्रकाशन का अंतिम निर्णय तेरापंथ टाइम्स संपादक मंडल का होगा।
7. रचना भेजने की अंतिम दिनांक- 31 अगस्त, 2025

रचना भेजने का माध्यम

ईमेल करें : abtyptt@gmail.com या
वॉट्सएप करें : +91 89059 95002

51 की तपस्या का अभिनन्दन समारोह

गंगाशहर।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा गंगाशहर के तत्वावधान में तेरापंथ भवन, गंगाशहर में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में तप अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। लाभचन्द आंचलिया पुत्र जेठमल - किरण देवी आंचलिया के 51 दिनों की तपस्या की अनुमोदना में बोलते हुए मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि तपस्या उच्च मनोबल से ही संभव है। तपस्या से आत्मा मोक्षगामी बनती है। पाप कर्मों का क्षय तपस्या से ही संभव है। तपस्या का लक्ष्य आत्मकल्याण होना चाहिए। तपस्या से रोगों का शमन होता है। मुनि श्रेयांस कुमार जी का स्वास्थ्य व बहिन तारादेवी बैद का उदाहरण अभी वर्तमान के हैं। मुनिश्री ने कहा - भोजन से ज्यादा भजन को महत्व देना चाहिए। भोजन तो अनेक भवों में, अनंतकाल से करते आएं हैं। भजन केवल मनुष्य जन्म में ही संभव है। लाभचन्द ने मुझे कहा था कि आपके चातुर्मास में मैं 51 दिवस की तपस्या करूंगा। श्रावक लाभचन्द ने अपना संकल्प पूरा किया। इससे पूर्व श्रावक सुरेन्द्र भूरा ने भी मासखमण करके अपनी कही हुई बात को पूरा किया।

मुनि श्री ने 51 दिवस की तपस्या पर नई गीतिका जोड़कर संगान किया एवं फरमाया कि गंगाशहर का सौभाग्य है कि यहां वर्षों से साध्वियों का सेवाकेन्द्र है लोगों को सतत सेवा दर्शन प्रवचन पात्रदान का लाभ मिलता रहता है। सेवाकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञा जी एवं साध्वी लब्धियशा जी का भी सतत श्रम लोगों को जागरूक बना रहा है।

मुनि श्रेयांस कुमार जी ने तपस्या के अवसर पर मुनि सुमति कुमार जी के द्वारा रचित गीतिका का संगान किया। इस अवसर पर मुनि रश्मिकुमारजी, मुनि आदित्य कुमार जी के उन्नत भाव प्राप्त हुए। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी से प्राप्त संदेश का वाचन सभा के पूर्व अध्यक्ष अमर चन्द सोनी ने किया।

तेरापंथ सभा की ओर से देवेन्द्र डागा ने अपने विचार प्रस्तुत किये। जैन लुणकरण छाजेड़, अमरचन्द सोनी ,गणेशमल बोथरा नवरतन बोथरा जतनलाल संचेती आदि सभा के, युवक परिषद के कार्यकर्ताओं ने तपस्वी लाभचन्द का साहित्य, पताका व अभिनन्दन पत्र से तप की अनुमोदना की। मंजूदेवी आंचलिया ने पारिवारिक जनों के साथ गीतिका का संगान कर समा बांध दिया। इस अवसर पर सम्पत देवी भंसाली ने 28, पवन छाजेड़ ने 18, नीलम बोथरा ने 15, तारा देवी बैद ने 15 आदि अनेकों तपस्याओं का प्रत्याख्यान हुआ।

वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में, वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् हैदराबाद द्वारा तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में किया गया। साध्वीश्री द्वारा नवकार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। भिक्षु प्रज्ञा मंडली द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। तेयुप अध्यक्ष राहुल गोलछा ने पधारे हुए श्रावक समाज का स्वागत किया। साध्वी गवेषणाश्रीजी ने समझाया कि जीवन में जब भावों की निर्मलता आती है, तभी वीतरागता का प्रकाश आत्मा में उतरता है। साध्वी वृंद द्वारा वीतरागता पर सुमधुर गीतिका का संगान किया गया। मुमुक्षु वीनू सकलेचा ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि मोक्ष के अनेक मार्ग बताए गए हैं, जिनमें से एक है भक्ति का मार्ग। मैं तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ समाज एवं साध्वीश्री जी के प्रति अनंत-अनंत कृतज्ञता व्यक्त करती हूं। यह भक्तिमय अभिनंदन समारोह हमारे लिए निर्जरा का एक महत्वपूर्ण कारण बन सकता है, क्योंकि भगवान ने करना, कराना और अनुमोदन—इन तीनों को समान महत्व दिया है। आज वीतराग पथ दिखाने वाले, वीतराग पथ पर चलने वाले और वीतराग पथ पर बढ़ाने वाले आप सबके माध्यम से हमें कर्म-निर्जरा का एक अद्भुत अवसर प्राप्त हुआ है।

वीतराग पथ कार्यशाला पर सुझाव देते हुए मुमुक्षु वीनू सकलेचा ने कहा— यदि हम हर घंटे से मात्र 2 मिनट निकाल पाएं, तो पूरे दिन में 48 मिनट प्राप्त हो सकते हैं। इसलिए, मैं आप सभी से निवेदन करती हूं कि हम जहां भी रहें, किसी भी परिस्थिति में रहें, प्रतिघंटा 2 मिनट निकालकर प्रतिदिन 48 मिनट वीतरागता की दिशा में बढ़ने का प्रयास करें। संचालन विनोद दुगड़ व मंत्री नीरज सुराणा ने आभार व्यक्त किया।

अनावेश, अनाग्रह और अनासक्ति से हो सकती है तनाव मुक्ति

यशवंतपुर।

तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा 'हेल्थ इज़ वेल्थ' के अंतर्गत 'तनाव से मुक्ति – एक नई सोच' का आयोजन तेरापंथ सभा भवन, यशवंतपुर में किया गया। यह कार्यक्रम साध्वी सोमयशाजी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम की प्रमुख वक्ता जीया जैन थीं।कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ, तत्पश्चात तेरापंथ युवक परिषद्, यशवंतपुर के मंत्री अभिषेक पोखरना ने पधारी हुई ट्रेनर जीया जैन का स्वागत करते हुए उनका परिचय दिया। साध्वी डॉ. सरलयशाजी ने बताया कि जीवन की सबसे बड़ी समस्या तनाव है, जो हर उम्र के लोगों में आम है। उन्होंने तनाव के कारणों और उन्हें कम करने के उपायों के बारे में विस्तार से समझाया।

साध्वी सोमयशाजी ने बताया कि भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांतों से निकले तीन शब्द—अनावेश, अनाग्रह और अनासक्ति—को जीवन में अपनाने से चित्त में समाधि बनी रहती है। साथ ही उन्होंने कहा कि 'Please', 'Sorry' और 'Thanks' इन तीन शब्दों को अपनाने से भी जीवन तनावमुक्त हो सकता है। तनाव से मुक्ति के लिए अनुप्रेक्षा का अभ्यास भी कराया गया। इसके बाद कार्यक्रम की वक्ता जीया जैन ने कहा कि तनाव की शुरुआत घर से ही होती है, आजकल घरों में लगभग सभी लोग तनाव में जी रहे हैं। उन्होंने बताया कि 'Over Information' और 'लोग क्या कहेंगे' जैसी सोच भी तनाव के प्रमुख कारण हैं। तनाव को कम करने के लिए उन्होंने सरल उपाय सुझाए। कार्यक्रम में तेरापंथ अध्यक्ष धर्मेश डूंगरवाल एवं उनकी टीम, अभातेयुप साथी विनोद मुथा, सभा अध्यक्ष सुरेश बरडिया एवं उनकी टीम, महिला मंडल अध्यक्ष रेखा पितलिया एवं उनकी टीम, सभा के पूर्व अध्यक्ष गौतम मुथा, प्रकाश बाबेल तथा संपूर्ण श्रावक-श्राविका की उपस्थिति रही। मंच संचालन एवं आभार-प्रदर्शन तेयुप मंत्री अभिषेक पोखरना ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह

गुवाहाटी। मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार, मुनि रमेश कुमार के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल, गुवाहाटी (सत्र 2025-27) की नई कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में आयोजित हुआ। मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि समाज में एकजुटता और सकारात्मक सोच ही प्रगति का मूल आधार है। उन्होंने सभी बहनों को आंतरिक जागरूकता विकसित करने का आह्वान किया, जिससे वे सभी बाधाओं को पार कर सकें। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत से हुई। निवर्तमान अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा ने सभी का हार्दिक स्वागत करते हुए अपने कार्यकाल के दौरान मिले सहयोग के लिए आभार प्रकट किया तथा नव-निर्वाचित अध्यक्ष एवं उनकी टीम को बधाई और शुभकामनाएं दीं। तत्पश्चात सत्र 2025-27 की नव-निर्वाचित अध्यक्ष सुशीला मालू को अमराव बोथरा ने पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। नव-निर्वाचित अध्यक्ष सुशीला मालू ने संरक्षिका, परामर्शक मंडल, पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों को शपथ दिलाई। पदाधिकारीगण में मीरा सुराणा (वरिष्ठ उपाध्यक्ष), बबीता लुणावत (उपाध्यक्ष द्वितीय), सुचित्रा छाजेड़ (मंत्री), संध्या कोठारी एवं राजश्री कुचेरिया (सह-मंत्री), विनीता सुराणा (कोषाध्यक्ष), सुनीता मालू (प्रचार-प्रसार मंत्री), प्रेम नाहटा (संगठन मंत्री), सोनू सुराणा एवं कविता जोगड़ (कन्या मंडल प्रभारी/सह-प्रभारी) शामिल हैं। नव-निर्वाचित अध्यक्ष ने अपने उद्बोधन में कहा कि वे अपने पद की जिम्मेदारी पूर्ण जागरूकता, समर्पण एवं तत्परता से निभाएंगी और सभी के सहयोग से मंडल को नई ऊँचाइयों पर ले जाने का संकल्प लेती हैं। समारोह में तेरापंथी सभा अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा, तेरापंथ युवक परिषद के पूर्व अध्यक्ष सतीश भादानी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष संजय चौरड़िया, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष पंकज भूरा, एटिएमआरएफ अध्यक्ष विजयराज डोसी, उल्लास महिला समिति एवं छापर नागरिक परिषद ने नव-अध्यक्ष एवं मंत्री का सम्मान किया। इस अवसर पर समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मंत्री ममता दुगड़ ने किया एवं आभार ज्ञापन नव-मनोनीत मंत्री सुचित्रा छाजेड़ ने किया।

जसोल। साध्वी रतिप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद का शपथ ग्रहण समारोह स्थानीय पुराना ओसवाल भवन, जसोल में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई तथा मनीष बोकड़िया द्वारा मंगलाचरण से शुभारंभ हुआ। निवर्तमान तेयुप अध्यक्ष मनीष बोकड़िया ने नवनिर्वाचित तेयुप अध्यक्ष ऋषभ बुरड़ को शपथ दिलाई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष ऋषभ बुरड़ ने अपने नए मंत्रीमंडल का गठन कर सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई, जिनमें उपाध्यक्ष (प्रथम) तरुण भंसाली, उपाध्यक्ष (द्वितीय) जितेंद्र मंडोत, मंत्री जेठमल बुरड़, सहमंत्री (प्रथम) नितिन मंडोत, सहमंत्री (द्वितीय) अभिनंदन ढेलडिया, कोषाध्यक्ष अभिनंदन सालेचा, संगठन मंत्री अंकित तातेड़ सहित अन्य पदाधिकारी मनोनीत किए गए। इससे पूर्व तेरापंथ युवक परिषद द्वारा विजय गीत का सामूहिक गायन किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन तेरापंथ सभा के पूर्व मंत्री संपतराज चौपड़ा ने किया। अध्यक्ष ऋषभ बुरड़ ने आगामी एक वर्ष की कार्ययोजना का विवरण प्रस्तुत किया। साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि अग्रणी संस्था तेरापंथ युवक परिषद पूरे भारत में 350 से अधिक शाखाओं के साथ सक्रिय है। कार्यक्रम का संचालन ललित सालेचा ने किया।

नालासोपारा। तेरापंथ युवक परिषद नालासोपारा की नवगठित कार्यकारिणी टीम का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि द्वारा विधिवत सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। तेयुप सदस्यों ने विजय गीत का संगान किया। संस्कारक पारस बाफना ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया। जैन संस्कार विधि का संचालन रमेश ढालावत, पारस बाफना एवं अरविंद धाकड़ द्वारा किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष मनोज सोलंकी ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष अमित मेहता को शपथ दिलाई। तत्पश्चात अमित मेहता ने अपनी नवनिर्मित कार्यकारिणी टीम को शपथ दिलाई और सभी सदस्यों के सहयोग से संगठन को और ऊंचाइयों पर ले जाने का संकल्प लिया। उन्होंने वर्ष 2025–26 के लिए तेयुप कोर कमेटी कार्यकारिणी की घोषणा की। निवर्तमान अध्यक्ष मनोज सोलंकी ने सदस्यों को तेयुप के आगामी कार्यक्रमों में कार्य करने तथा जुड़ने की प्रेरणा दी। जितेश हिरण, किशन कोठारी, कमलेश खाब्या एवं संस्कारक पारस बाफना ने नई टीम के लिए शुभकामनाएं प्रेषित कीं। किशोर मंडल संयोजक अर्हम कोठारी और कन्या मंडल संयोजिका खुशी सोलंकी ने भी अपने विचार रखे और टीम के प्रति मंगलभावना प्रकट की। कार्यक्रम का संचालन और आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री उमेश कोठारी ने किया।

तपस्या से बनती है आत्मा आभामंडित और ऊर्जा संपन्न

बालोतरा।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन अमृत सभागार में तपस्वियों का तप अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ। राजेश बाफना ने बताया इस चातुर्मास में आत्म अवलोकन का सुनहरा अवसर मिला जिसमें अनिता जीरावला, संगीता जीरावला, मुदित गांधी मेहता ने पन्द्रह की तपस्या की।

इस अवसर पर अनेक तपस्वियों ने अपनी-अपनी तपस्या का प्रत्याख्यान किया। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा - मोक्ष-मार्ग के चार साधन हैं - ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप। तप की महत्ता को हर धर्म-दर्शन में व्याख्यायित किया गया है, पर जैन धर्म में तप का अतिरिक्त प्रभाव है। तपस्या जैन-धर्म का प्राण तत्त्व है। तपस्या वह ज्योति है, जिससे आत्मा प्रकाशित होती है। तपस्या वह ऊर्जा है, जिससे जीवन ऊर्जामय बनता है तपस्या वह रक्षा कवच है जो विघ्न बाधाओं से मुक्ति दिलाता है।

तपस्या वह उज्ज्वल करणी है, जो शिवरमणी का पथ प्रशस्त करती है। साध्वीश्री ने कहा-चौमासे में विशेषकर श्रावण-भाद्रव मास में जैन समाज में तपस्या की बहार आ जाती है। बालोतरा में भी तप की नई बहार आई है। अच्छी बड़ी-बड़ी तपस्याएं हो रही है।

यह सब पूज्य गुरुदेव की ऊर्जा एवं आशीर्वाद से ही संभव है। तपस्वियों ने अपने सुदृढ़ मनोबल से तप के द्वारा आत्मा को भावित किया है एवं आभामंडल को आभामंडित किया है। मासखमण की प्रेरणा देते हुए साध्वीश्री ने कहा कि आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी का अवसर है, बालोतरा वासी नव इतिहास रचाएं, ऐसी हमारी भावना है। हमें विश्वास है गुरुकृपा से हमारी भावना फलवान बनेगी। साध्वी कर्णिकाश्रीजी, डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वयशाजी एवं साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने तपस्वियों की अनुमोदना में गीत का संगान कर तपस्वियों के उत्साह को वृद्धिंगत किया। सभा अध्यक्ष महेन्द्र वेदमुथा, अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा, गगन जीरावला, ध्रुवी जीरावला, सुमन जीरावला, अक्षिता मांडोत ने अपने वक्तव्य से तप की अनुमोदना की। सभा द्वारा तप के द्वारा तप का सम्मान, आह्वान किए जाने पर अनेक भाई-बहनों ने तप के संकल्प के साथ तपस्वियों की तप अनुमोदना की। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री प्रकाश वेदमूथा ने किया।

दायित्व बोध कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथ युवक परिषद द्वारा साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में दायित्व बोध कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, डी. वी. कॉलोनी में किया गया। अध्यक्ष राहुल गोलछा ने सभी का स्वागत किया।

डॉ. साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि समाज में जीने के लिए दो जीवन तत्वों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। उनमें पहला स्थान दायित्व बोध का है। हम जिस परिवेश में जाते हैं, उससे हमें जो अधिकार प्राप्त होते हैं, उनके बदले में हमें कुछ कर्तव्य निभाने होते हैं। तभी जीवन और समाज के साथ उचित तालमेल स्थापित हो सकता है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व — जो भी करने योग्य कार्य हैं, वे सभी दायित्व की श्रेणी में आते हैं।

हमें अपने दायित्व से विमुख नहीं होना चाहिए। प्रत्येक पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता का दायित्व है कि वह अपने कर्तव्य को समझे।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि दायित्व उसी व्यक्ति के पास आता है जो जिम्मेदारी को समझता है। उपभोक्ता संस्कृति का सबसे दुखद पहलू यह है कि व्यक्ति अपने दायित्व के प्रति मौन रहता है, जबकि अधिकारों की मांग को लेकर सड़क पर नारेबाजी करता दिखाई देता है।

यदि कर्तव्य के मार्ग में अधिकार अवरोध न बनें, तो स्वस्थ समाज की संरचना संभव है।

साध्वी मेरुप्रभा जी ने विषय से संबंधित सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। साध्वी दक्षप्रभा जी ने युवाओं को सुस्वर से प्रेरित किया।

'कौन बनेगा सुर सम्राट' धार्मिक संगीत प्रतियोगिता का आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में 'कौन बनेगा सुर सम्राट' धार्मिक संगीत प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल पूर्वांचल द्वारा भिक्षु विहार में किया गया।

इस प्रतियोगिता में प्रथम वर्ग के अंतर्गत 9 से 14 वर्ष के बच्चों को तथा द्वितीय वर्ग के अंतर्गत 14 से 19 वर्ष के टीनएजर्स को अवसर प्रदान किया गया। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका रीमा मिश्रा और सुषमा बैंगानी ने निभाई। कुल 34 बच्चों ने इसमें भाग लिया।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा कि भारतीय संस्कृति में संगीत का बड़ा महत्व है। संगीत एक प्रकार की चिकित्सा है, जो व्यक्ति को राग से विराग की ओर, असत से सत की ओर और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जा सकता है।

उन्होंने बच्चों की उत्कृष्ट प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए सभी के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। छोटे बच्चों के वर्ग में प्रथम स्थान सानवी नाहटा, द्वितीय स्थान रुचिर जैन और तृतीय स्थान निया कोठारी ने प्राप्त किया।

टीनएजर्स वर्ग में प्रथम स्थान दिव्यंका बैद, द्वितीय स्थान मोनिका भादाणी और तृतीय स्थान काव्या सेठिया ने प्राप्त किया। विजेताओं एवं सभी प्रतिभागियों को तेरापंथ महिला मंडल द्वारा पुरस्कृत किया गया। आभार एवं कार्यक्रम का संचालन कार्यसमिति सदस्या बबीता सुराणा ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
18 अगस्त - 24 अगस्त, 2025

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम ने देशभर में किया एक साथ नेत्र जांच शिविर 'मिशन दृष्टि' का आयोजन

अहमदाबाद

बच्चों की आंखों की जांच का राष्ट्रीय कीर्तिमान तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) ने पूरे भारत में एक साथ '1 राष्ट्र, 1 दिन, 1 लाख छात्र, 101 स्थान' के संकल्प के साथ मिशन दृष्टि 2025 के अंतर्गत मेगा नेत्र जांच शिविरों का आयोजन कर नेत्र स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व उपलब्धि स्थापित की। यह अभियान देश के 100 से अधिक शहरों और सैकड़ों विद्यालयों में आयोजित हुआ, जिसके अंतर्गत 1,15,000 से अधिक बच्चों की आंखों की जांच की गई — जो कि एक दिन में किए गए सबसे अधिक दृष्टि परीक्षणों में से एक माना जा रहा है।

इस राष्ट्रव्यापी आयोजन की शुरुआत एक विशेष उद्देश्य और सामूहिक मिशन भावना के साथ की गई थी, जिसका ध्येय था — देशभर के स्कूली बच्चों में नेत्र स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना, प्रारंभिक स्तर पर दृष्टि दोष की पहचान करना और स्क्रीन टाइम के बढ़ते प्रभाव को ध्यान में रखते हुए आंखों की सुरक्षा पर कार्यशालाएं आयोजित करना। सभी शाखाओं से इस अभियान में भागीदारी हेतु एक साझा गूगल फॉर्म जारी किया गया था। इस कार्यक्रम में आंखों की जांच, चश्मे की सलाह, नेत्र जागरूकता कार्यशालाएं और निःशुल्क परामर्श जैसी महत्वपूर्ण सेवाएं शामिल थीं, जिससे लाखों बच्चों और उनके परिवारों को लाभ प्राप्त हुआ। टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में मिशन दृष्टि 2025 की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह राष्ट्रव्यापी नेत्र जांच अभियान तेरापंथ समाज की सेवा भावना और सामाजिक जिम्मेदारी का उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने कहा कि बच्चों में नेत्र स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाना एक अत्यंत आवश्यक कार्य था, जिसे देशभर की शाखाओं ने मिलकर सफलतापूर्वक संपन्न किया। मांडोत ने सभी सहयोगी चिकित्सकों, स्वयंसेवकों और स्कूल प्रशासन का आभार व्यक्त करते हुए आगे भी इसी समर्पण और संगठनभाव से कार्य करते रहने का आह्वान किया।

इस अवसर पर टीपीएफ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नवीन चोरडिया और महामंत्री मनीष कोठारी की संगठनात्मक सक्रियता और मार्गदर्शन भी उल्लेखनीय रहा, जिनके समन्वय से विभिन्न क्षेत्रों की शाखाएं इस अभियान में एकजुट होकर सहभागी बन सकीं। उन्होंने मिशन दृष्टि को केवल एक स्वास्थ्य सेवा नहीं, बल्कि तेरापंथ की सामाजिक चेतना का विस्तार बताया। 'मिशन दृष्टि' के प्रति राष्ट्रभर की शाखाओं, डॉक्टरों, स्कूल प्रबंधन, सामाजिक संगठनों और स्वयंसेवकों ने दिल खोलकर सहभागिता दिखाई।

संयोजक गौतम दुगड़ के मार्गदर्शन में देशभर की शाखाओं को इस मिशन से जोड़ा गया और इसे एक सार्थक, संगठित एवं सफल जन-स्वास्थ्य अभियान के रूप में रूपांतरित किया गया। 'एक देश, एक दिन, एक लाख विद्यार्थी' के ऐतिहासिक लक्ष्य के साथ आयोजित इस नेत्र परीक्षण शिविर को 'इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' एवं 'एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' में भी स्थान प्राप्त हुआ, जिससे इस सेवा कार्य को वैश्विक पहचान मिली।

हुबली

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा मिशन दृष्टि के अंतर्गत उत्तर कर्नाटक शाखा ने शांति निकेतन अंग्रेजी माध्यम स्कूल, हुबली में नेत्र जांच शिविर आयोजित किया। इस कैंप में 223 बच्चों की आंखों की जांच की गई। शिविर में मुनि विनीत कुमार जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत मुनि विनीत कुमार जी द्वारा नवकार मंत्र के मंगलाचरण से हुई। अध्यक्षता तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम उत्तर कर्नाटक के आई.पी.पी. विनोद वेदमूथा ने की।

मुख्य अतिथि के रूप में शांति निकेतन अंग्रेजी माध्यम स्कूल के चेयरमैन भंवरलाल जैन तथा प्राध्यापक डॉ. कैथरीन और डॉ. सौरभ ने मंच की शोभा बढ़ाई। तेरापंथ सभा हुबली अध्यक्ष पारसमल भंसाली, तेरापंथ युवक परिषद हुबली अध्यक्ष हेमंत चोपड़ा, अणुव्रत समिति हुबली अध्यक्ष महेंद्र पालगोता, विशेष आमंत्रित उत्तर कर्नाटक आंचलिक तेरापंथ सभा मंत्री रमेश चोपड़ा, अणुव्रत विश्व भारती राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य केसरीचंद गोलछा, महिला मंडल सदस्य, एवं TPF सदस्य विशाल कटारिया (कन्वेनर आई कैंप), विशाल बोहरा, मनील वेदमूथा सहित कई गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन कोमल कटारिया ने किया।

वाणी

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम यवतमाल-अमरावती द्वारा मिशन दृष्टि अभियान के अंतर्गत मेगा आई कैंप का आयोजन अल्फोर्से स्वर्णलीला इंटरनेशनल स्कूल, वाणी में किया गया।

टीपीएफ अध्यक्ष डॉ. सपना बैद ने जानकारी देते हुए बताया कि संपूर्ण भारत में एक ही दिन, दो सौ से अधिक स्थानों पर, स्कूलों के माध्यम से इस अनूठे अभियान का आयोजन किया जा रहा है। इसका उद्देश्य बच्चों को डिजिटल स्क्रीन व मोबाइल के अत्यधिक उपयोग से होने वाले दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करना और उनकी आंखों की जांच कर समस्याओं का समाधान प्रदान करना है।

कैंप में गणेशनंद नेत्रालय के डॉ. पवन भंडारी, नेत्रालय हॉस्पिटल के डॉ. स्वप्निल गोहोकर एवं डॉ. कोमल गोहोकार ने पूर्ण सहयोग व मार्गदर्शन प्रदान किया। इस दौरान 500 से अधिक बच्चों की नेत्र जांच की गई।

कार्यक्रम में स्कूल के मुख्य प्राध्यापक विक्की मोहनानी, टीपीएफ टीम के सदस्य सरोज भंडारी, रोहित गेलडा, अक्षय छाजेड, सीए प्रतीक बैद एवं गवेषणा भंडारी ने कैंप के समापन तक सक्रिय सहयोग दिया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष विजयजी भंडारी एवं तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष सरोज भंडारी ने अपनी विशेष उपस्थिति दर्ज की। अंत में, टीपीएफ की ओर से सभी का आभार व्यक्त किया गया।

छत्रपति संभाजीनगर

मिशन दृष्टि के अंतर्गत आई चेक अप कैंप का आयोजन किया गया। उपस्थित सभी का स्वागत टीपीएफ छत्रपति संभाजीनगर के अध्यक्ष डॉ.आनंद नाहर ने किया एवं मिशन दृष्टि के बारे में विस्तृत जानकारी दी। ASG आई हॉस्पिटल के अभिजीत चक्रवर्ती ने बच्चों में बढ़ते जा रहे मायोपिया पर विशेष जानकारी दी। स्कूल प्रिंसिपल माधुरी सिंह भाटी ने तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के इस अभियान की प्रशंसा की और ऐसे अभियान बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता बढ़ाने के लिए बार-बार हो ऐसी इच्छा व्यक्त की। ASG आई हॉस्पिटल से AGM प्रेम चौपड़ा और ऑप्टोमेट्रिस्ट श्रद्धा हिवाले ने 525 बच्चों और कई अध्यायकों का आई चेकअप किया। इस अवसर पर तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के कोषाध्यक्ष चेतन सुराणा, मंत्री सचिन जैन, फेमिना विंग कन्वीनर डॉ. रुपाली नाहर, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष वीरेंद्र मरलेचा आदि का अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का हुआ आयोजन

अमराईवाड़ी ओढ़व।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् अमराईवाड़ी-ओढ़व द्वारा आयोजित व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'युवा पथ' का आयोजन युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के प्रवास स्थल प्रेक्षा विश्व भारती, कोबा में राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुई। विजय गीत का वाचन दिनेश टुकलिया एवं विपुल मांडोत ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा द्वारा किया गया।

स्वागत वक्तव्य में तेयुप अध्यक्ष अशोक पगारिया ने कहा कि केंद्र से निर्देशित सभी कार्यों को सुचारू रूप से करेंगे तथा हमारा पूरा लक्ष्य MBDD के अधिक से अधिक कैंप आयोजित करने का है। उन्होंने सम्यक दर्शन कार्यशाला, TTF, CPS और गुजरात स्तरीय कार्यशाला करने का भी प्रयास करने की बात कही। अभातेयुप के तीनों आयाम – सेवा, संस्कार और संगठन – के अंतर्गत तेयुप अमराईवाड़ी-ओढ़व द्वारा किए गए अनेक कार्यों की संक्षिप्त झांकी वीडियो के माध्यम से प्रस्तुत की गई।

इसके पश्चात राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने अपने वक्तव्य में कहा कि संख्या की दृष्टि से यह परिषद छोटी है, पर कार्य करने की दृष्टि से अन्य परिषदों के लिए प्रेरणा समान है। तेयुप अमराईवाड़ी-ओढ़व परिषद गुरुदेव के चातुर्मास में प्रत्येक मंगलवार को सेवा में अपना योगदान दे रही है। इसी प्रकार सभी युवा शक्ति, भक्ति और क्रांति के पथ पर चलें, और अमराईवाड़ी एवं अहमदाबाद परिषद संयुक्त रूप से सभी कार्यों को मिलकर करें। युवा पथ कार्यशाला में विशेष आध्यात्मिक मार्गदर्शन देते हुए आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमारजी ने कहा कि यदि युवा शक्ति कुछ ठान ले तो कुछ भी असंभव नहीं है; सब कुछ संभव है।

केवल हमारा समाज ही नहीं, पूरा समाज यह गीत गाता है – तेरापंथ के युवाओं से गुरु भक्ति सीखी जा सकती है। युवा पथ बहते झरने जैसा होना चाहिए – हमेशा प्रवाहित और निर्मल। श्रेष्ठ युवा वही है जिसका कार्य purposeful, progressive और productive हो। गुरु की दृष्टि मिल जाए, वही हमारा पथ है।

शाखा प्रभारी कुलदीप नवलखा ने कहा कि यहां युवक परिषद, सभा, महिला मंडल और किशोर मंडल सभी मिलकर कार्य करते हैं। सभा मंत्री निर्मल ओस्तवाल, उपाध्यक्ष दिनेश चंडालिया, तेरापंथ मेवाड़ मंडल अध्यक्ष रमेश पगारिया और अहमदाबाद परिषद अध्यक्ष प्रदीप वागरेचा ने अपने विचार व्यक्त किए और युवा पथ कार्यशाला की सराहना की। कार्यशाला में अभातेयुप सदस्यों एवं लगभग 48 युवाओं की सहभागिता रही। अंत में तेयुप के सहमंत्री मयंक गेल्डा ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यशाला का संचालन मंत्री हेमंत पगारिया ने किया।

'महामंत्र नवकार करता भवपार' विषय पर कार्यशाला सम्पन्न

गंगापुर।

असांप्रदायिक, आध्यात्मिक और रहस्यपूर्ण शक्तियों से युक्त नवकार महामंत्र की महिमा पर विशेष कार्यशाला का आयोजन कालू कल्याण कुंज, गंगापुर में 'महामंत्र नवकार करता भवपार' विषय पर किया गया। इस अवसर पर मुनि प्रसन्न कुमार जी ने नवकार महामंत्र की अद्वितीय महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने इसे असांप्रदायिक एवं प्रभावशाली आध्यात्मिक मंत्र बताते हुए कहा कि यह किसी विशेष व्यक्ति, संप्रदाय या मत से नहीं जुड़ा है, बल्कि इसमें केवल पंच परमेष्ठियों — अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु — का वंदन समाहित है।

मुनिश्री ने कहा कि त्यागी और तपस्वी महापुरुषों से ओतप्रोत यह मंत्र साधना से शक्ति-संपन्न बनता जाता है। ज्यों-ज्यों इसकी साधना गहराती है, त्यों-त्यों इसका प्रभाव भी बढ़ता है। इसके पवित्र परमाणुओं का आभामंडल साधक के चारों ओर एक अत्यंत शक्तिशाली और अभेद्य सुरक्षा कवच का निर्माण करता है। उन्होंने आगे कहा कि नवकार महामंत्र की शब्द-रचना विलक्षण है और इसके प्रत्येक अक्षर में आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होता है। यह मंत्र आत्मा के शत्रु 'कर्मों' का विनाश करने की शक्ति रखता है और साधक को आत्म-शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

मुनिश्री ने कहा — 'नवकार महामंत्र किसी जाति, भाषा या वर्ग की सीमाओं में नहीं बंधा है। चाहे कोई शिक्षित हो या अशिक्षित, यदि वह श्रद्धा और भक्ति से इसका जाप करता है, तो उसे अद्भुत लाभ अवश्य प्राप्त होते हैं।' उन्होंने अतीत से लेकर वर्तमान तक इस महामंत्र के प्रभाव से घटित अनेक चमत्कारी अनुभवों का उल्लेख करते हुए बताया कि इसके नियमित जाप से साधकों को आत्मिक शांति, मानसिक स्थिरता और जीवन में स्पष्टता प्राप्त होती है।

इस कार्यशाला का उद्देश्य जनमानस में नवकार महामंत्र के प्रति श्रद्धा, समझ और साधना की भावना को जागृत करना था।

बोलती किताब

परमसुख का पथ

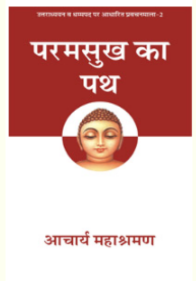

जो प्रमुख होता है, वह पथदर्शन दे और कार्यकर्ता में प्रोत्साहन का प्राण फूंकता रहे तो कार्यकर्ता बड़ी निष्ठा के साथ कार्य कर सकता है। उसे प्रोत्साहन न मिले, प्रेरणा न मिले, पथदर्शन न मिले तो धीरे-धीरे कार्यकर्ता रूपी जो फूल है वह मुरझा भी सकता है। फूल मुरझाए नहीं। इसलिए सिंचन की आवश्यकता होती है। हमारी बाल-पीढ़ी एक नई पौध है। ज्ञानशाला के माध्यम से इस पीढ़ी को सिंचन देने का प्रयास किया जा रहा है। आज जो बच्चे हैं, वे कभी बड़े होंगे और अच्छे कार्यकर्ता बन सकेंगे। उनको संस्कार देने की अपेक्षा है। उन्हें तैयार करने की अपेक्षा है। हमारी प्रशिक्षिकाएं और कार्यकर्ता अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए बच्चों को संस्कारी बनाने का प्रयास करें और उन्हें सारपूर्ण बातें बताएं।

एक संत के जीवन में सुगन्ध होती है। उसकी वाणी में भी सुगन्ध होती है। वह सुगन्ध जब फैलती है तो कितने-कितने लोगों को लाभ मिलता है, कितने-कितने लोगों को शांति मिलती है। संत के लिए कहा गया कि वह पंखे के समान होता है। जैसे पंखा स्वयं परिश्रम करता है, घूम-घूमकर आस-पास और नीचे बैठने वाले लोगों का ताप हरण करता है। वैसे ही संत भी जो स्वयं साधना करने वाला है, वह भी घूम-घूम कर लोगों का ताप-संताप दूर करने का प्रयास करता है।संत के शील में एक सुगन्ध होती है और शील का बड़ा प्रभाव माना गया है। जहां एक ओर आत्मा की निर्मलता बढ़ती है, तो कई बार बाह्य प्रतिकूलताएं भी दूर हो जाती हैं।

फूलों की सुगन्ध तो हमारे आस-पास हो या न हो इतनी खास बात नहीं है, पर शील की सुगन्ध हमारे पास रहे, संयम की सुगन्ध हमारे पास रहे और सादगी की सुगन्ध हमारे पास रहे। कई लोग सेन्ट आदि लगाते हैं। ये सब बाह्य चीजें हैं। भीतर की सुगन्ध प्रस्फुटित हो जाए तो आदमी का कल्याण हो सकता है और वह अपने परम लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकता है। संसार में जितना भी दु:ख है, वह काम की अनुवृद्धि से पैदा होने वाला है, कामना से उत्पन्न होने वाला है। इसलिए कामना को छोड़ दें तो साधना निर्मल बन जाएगी और साधना निर्मल होगी तो उसकी सुगंध देवों तक भी फैल सकती है। साधना को आगे से आगे बढ़ाने का और परिष्कृत करने का प्रयास करते रहें, यही काम्य है।

हम धर्मशास्त्रों को सुनते हैं। उनमें कितनी अच्छी-अच्छी बातें आती हैं। उन बातों को हम कान का अतिथि बनाते हैं। यह बहुत अच्छी बात है, किन्तु कोई-कोई बात अगर हमारे जीवन में आ जाए, जीवनगत हो जाए तो एक सुन्दर पाथेय हमारे पास आ सकता है और वह पाथेय हमारे लिए कल्याणकारी, हमारी आत्मा का उद्धार करने वाला बन सकता है। जीवन में कभी गलतियां भी हो सकती हैं। गलतियां होना कोई बड़ी बात नहीं है, परन्तु उनको दोहराना नहीं चाहिए। आदमी को गलतियों का परिष्कार करना चाहिए। अपनी आदतों में परिष्कार लाना चाहिए। शिक्षा की दो बातें बताई गईं—आदमी को तेज गुस्से की स्थिति में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। उस समय का लिया गया निर्णय गलत हो सकता है। इसी प्रकार अति खुशी में आदमी को कोई वचन नहीं देना चाहिए, जबान नहीं देनी चाहिए। क्योंकि भावुकता में कभी आदमी ऐसा वचन दे देता है, जिसको पूरा करना मुश्किल हो जाता है। आदमी वचन दे तो सोच समझकर देना चाहिए। आदमी को प्रियता की स्थिति आने पर अति हर्ष में नहीं जाना चाहिए और कोई अप्रियता की स्थिति आ जाए तो ज्यादा उद्वेग में नहीं जाना चाहिए। आदमी को समता का अभ्यास करना चाहिए। समता का अभ्यास बड़ी साधना है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

पृष्ठ 1 का शेष

बाल्यावस्था है अर्जन...

आज शिक्षा के प्रति जागरूकता है कि बच्चे शिक्षा के लिए विदेश भी जाते हैं। वहां भी यदि संस्कार अच्छे रहें तो यह बड़ी बात है। विदेशों में कई स्थानों पर केंद्र हैं और वहां समणियां रहती हैं। विदेशों में रहने वाले जैन परिवारों और उनके बालकों को समणियों के संपर्क में रहने से अच्छे संस्कार प्राप्त हो सकते हैं। साधु-साध्वियों के द्वारा भी धर्म की प्रेरणा देने का कार्य किया जाता है। विद्या संस्थानों और परिवारों द्वारा भी अच्छे संस्कार देने का प्रयास होता रहना चाहिए। मीडिया के माध्यम से भी बच्चों को अच्छे संस्कार मिल सकते हैं।

आज ज्ञानशाला दिवस है। तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में यह उपक्रम बरसों से चलता आ रहा है। ज्ञानशाला का स्वरूप आज काफी व्यवस्थित दिखाई दे रहा है। ज्ञानशाला में बच्चों को अच्छा धार्मिक ज्ञान मिल सकता है और साथ ही अच्छे संस्कार भी मिल सकते हैं। ज्ञानशाला का यह क्रम अच्छे ढंग से आगे बढ़ता रहे, यही कामना है।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि माता-पिता बच्चों को कंप्यूटर, मोबाइल आदि ऑपरेट करना सिखाते हैं। इसके साथ-साथ जीवन को भी ऑपरेट करना सिखाएं और उन्हें अच्छे संस्कारयुक्त बनाने का प्रयास करें।

महासभा के ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा 'ज्ञानशाला: एक प्रारूप' के नवीन संस्करण को पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित किया गया। ज्ञानशाला के राष्ट्रीय प्रभारी सोहनराज चौपड़ा व विमल घीया ने अपनी अभिव्यक्ति दी। अहमदाबाद व आसपास क्षेत्र के ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। आचार्यश्री ने ज्ञानार्थियों को पुनः मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए बच्चों को प्रतिदिन 21 बार नमस्कार महामंत्र का जप करना संकल्प भी स्वीकार कराया। कुलदीप नौलखा ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम के उपरान्त आचार्यश्री ने स्व. जबरमल दूगड़ व डॉ. जतनमल बैद परिवार को आध्यात्मिक संबल प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

आध्यात्मिक और सांसारिक...

इस प्रकार आध्यात्मिक और सांसारिक दोनों संदर्भों में साध्य-साधन का विवेक करना आवश्यक है। 'आयारो' में कहा गया है कि अज्ञानी, मूर्ख व्यक्ति निष्ठुर और निर्दय आचरण करता है और परिणामस्वरूप उसे सुख की जगह दुःख प्राप्त होता है। इसलिए गृहस्थ जीवन में भी जितना धर्म, त्याग और तपस्या का समावेश हो जाए, वही सबसे बड़ी संपत्ति है। मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान से जनता को लाभान्वित किया। राजू बैद ने भावाभिव्यक्ति दी। मुनि मदनकुमारजी ने तपस्या के संदर्भ में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

पृष्ठ 16 का शेष

भुक्त भोगों की ना...

अभातेममं की पदाधिकारियों द्वारा प्रतिवेदन भी पूज्यचरणों में प्रस्तुत किया गया। तेरापंथ कन्या मण्डल-अहमदाबाद द्वारा आस्था गीत की प्रस्तुति दी गई।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने समुपस्थित कन्याओं को प्रतिबोध प्रदान करते हुए कन्याओं को सकारात्मक सोच, सहिष्णुता का विकास करने और जीवन को प्रकाशमय बनाने की प्रेरणा प्रदान की। तदुपरान्त शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने समुपस्थित कन्याओं को पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि वर्तमान में आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष चल रहा है। इस समय में जितना संभव हो सके तप, स्वाध्याय, जप आदि करने का प्रयास करना चाहिए। ये बालिकाएं इस वर्ष में आचार्यश्री भिक्षु के संदर्भ में स्वाध्याय करने का प्रयास करें। 'तेरापंथ प्रबोध' को कंठस्थ करने का प्रयास किया जा सकता है।

बालिकाओं में धार्मिक विकास भी होना चाहिए। संस्कार अच्छे रहें, शक्ति अच्छी रहे और शक्ति का अच्छे कार्यों में होता रहे। कन्याओं में संस्कार आएं और उनकी सुरक्षा भी होती रहे।

पैंसठिया छंद अनुष्ठान

बीकानेर।

'शासनश्री' साध्वी मंजूप्रभा जी एवं 'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में पैंसठिया छंद का अनुष्ठान आयोजित हुआ। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की मंगल शुरुआत की गई।

साध्वी मंजूप्रभा जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि आज मनुष्य सुख चाहता है, शांति चाहता है। शांति कैसे मिलेगी? यह केवल वर्तमान का प्रश्न नहीं, बल्कि वर्षों से पूछा जा रहा है।

शांति प्राप्त करने के अनेक मार्ग और प्रयोग हैं, जिनमें से एक मार्ग है यंत्र और मंत्र की साधना। जैनों का एक सुप्रसिद्ध मंत्र है पैंसठिया छंद। साध्वी कुंथुश्री जी ने बताया कि पैंसठिया छंद में 1 से लेकर 25 तक अंक होते हैं, जिनमें 24 अंक तीर्थंकर के और 25वां अंक इष्ट की स्थापना के रूप में स्थापित किया गया है। इसकी विशेषता यह है कि ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ—कहीं से भी गणना करने पर योगफल 65 ही आता है, इसलिए इसका नाम 'पैंसठिया' प्रसिद्ध है। यह एक सुरक्षा कवच है। ग्रहों की शांति के लिए प्रतिदिन 7, 9 या 11 बार इसका पाठ करना चाहिए। साध्वी गुरुयशा जी और साध्वी जयंत प्रभा जी ने मंत्रोच्चारण किया।

प्रज्ञावान व्यक्ति देता है आत्मा की ओर ध्यान : आचार्य श्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
06 अगस्त, 2025

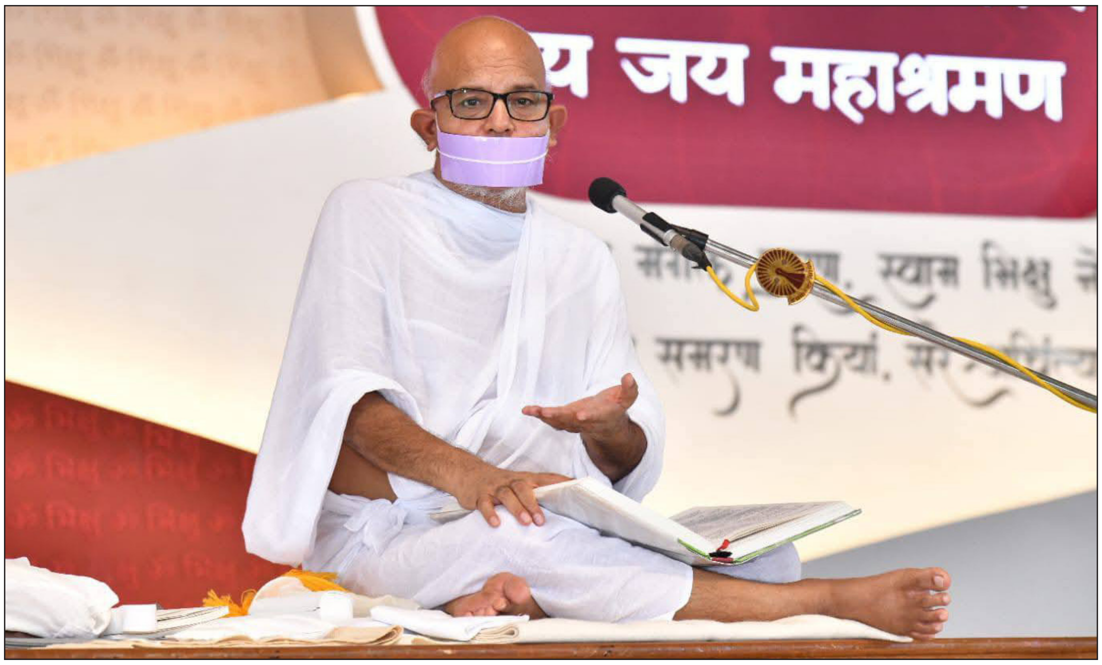

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा कि धर्म की साधना में अहिंसा की आराधना आवश्यक होती है। अहिंसा का पालन करना है तो हिंसा से निवृत्त होना होता है। आयारो आगम में बताया गया है कि जो प्रज्ञावान होता है और जो बुद्ध होता है, वह आरंभ से उपरत होता है।

निश्चय नय और व्यवहार नय — ये दो प्रकार की दृष्टियां बताई गई हैं। व्यवहार नय में स्थूल दृष्टि होती है और निश्चय नय में सूक्ष्म दृष्टि होती है। एक आदमी कहता है—मैं अकेला हूं, और दूसरा कहता है—मेरे साथ मेरा परिवार और मेरा समाज है। ये दोनों ही बातें सही हो सकती हैं। मैं अकेला हूं—यह बात आदमी अध्यात्म के संदर्भ में सोचता है कि मैं अकेला आया हूं, अकेले कर्म भोग रहा हूं और एक दिन अकेले ही चले जाना है। इस दृष्टि से मैं अकेला हूं यह बात भी सही है। वहीं व्यवहार नय से देखें तो पूरा परिवार और समाज साथ है, तो यह बात भी सत्य है कि जब कोई कठिनाई या समस्या आती है तो परिवार और समाज के लोग सहयोग करते हैं। इस प्रकार परस्पर सहयोग की वृत्ति भी समाज में देखी जाती है। इसलिए कहा गया है कि — 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' अर्थात परस्पर जीवों का सहयोग एक-दूसरे को प्राप्त होता है।

जो आदमी प्रज्ञावान होता है, वह निश्चय नय का ध्यान देता है। स्वयं को अकेला मानकर अपनी आत्मा की ओर ध्यान देता है। वह आदमी आंरभ-हिंसा को भी छोड़ देता है। जो प्रज्ञावान है, वह आंरभ से उपरत हो सकता है। जिसमें विवेक आ गया, वही बुद्ध होता है। वह अपनी आत्मा के हित के विषय में चिंतन करते हुए आंरभजा हिंसा से बचता है। सावद्य कार्यों से उपरत रहते हुए वह अपनी आत्मा के कल्याण की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करता है। अपनी आत्मा का कल्याण करने के लिए आदमी को निश्चय नय की दृष्टि से विवेक रखते हुए आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को अपने भीतर रहना और बाहर जीना चाहिए।

जितना संभव हो सके, आदमी को अनासक्ति की भावना रखने का प्रयास करना चाहिए। अनासक्ति की चेतना का विकास होता है तो आदमी हिंसा से भी बच सकता है और अपनी आत्मा को अध्यात्म की दिशा में आगे ले जा सकता है। आगमवाणी का अमृतपान कराने के उपरान्त आचार्यश्री ने 'तेरापंथ प्रबोध' के सरस संगान और आख्यान से भी श्रद्धालुओं को लाभान्वित किया। आचार्यश्री के पावन पाथेय के उपरान्त साध्वीवर्याजी ने समुपस्थित लोगों को उद्बोधित किया। अनेकानेक तपस्वियों ने अपनी-अपनी धारणानुसार आचार्यश्री से तपस्या का प्रत्याख्यान ग्रहण किया। मुनि मदनकुमारजी ने लोगों तपस्या के संदर्भ में प्रेरणा दी।

आत्मानुशासन श्रेष्ठ पर परानुशासन भी है आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
07 अगस्त, 2025

महामनस्वी, ज्योतिपुंज युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि अनुशासन दो प्रकार का होता है—एक आत्मानुशासन और दूसरा परानुशासन। स्वयं का स्वयं पर अनुशासन होना आत्मानुशासन कहलाता है और किसी अन्य का किसी अन्य पर अनुशासन होना परानुशासन कहलाता है। आत्मानुशासन आत्मा के लिए हितकर हो सकता है। व्यक्ति स्वयं अपने मन, वाणी, शरीर और इन्द्रियों पर संयम और नियंत्रण रखता है, तो यह स्वयं के द्वारा स्वयं पर अनुशासन कहलाता है। अणुव्रत गीत में भी कहा गया है—'अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा।' स्वयं के द्वारा स्वयं का अनुशासन ही अणुव्रत है।

आत्मानुशासन का महत्त्व है ही, परन्तु व्यवस्था की सुगमता की दृष्टि से और क्योंकि हर व्यक्ति में आत्मानुशासन विकसित नहीं होता, इसलिए परानुशासन की भी आवश्यकता हो जाती है। जिस व्यक्ति पर परानुशासन किया जाता है, वह उसे आत्मानुशासन की ओर ले जाने वाला होता है। आचार्य भिक्षु भी जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य अनुशास्ता और आद्य आचार्य थे। उनका आचार्यकाल लगभग तियालीस वर्ष का रहा। उस अवधि में उन्होंने अनेक दीक्षाएं और शिक्षाएं दीं तथा समीक्षाएं भी कीं। धर्मसंघ में उन्होंने अनुशासन को स्थापित किया।

आत्मानुशासन श्रेष्ठ है, परन्तु जब वह सबमें नहीं जागृत होता, तब परानुशासन आवश्यक हो जाता है। लोकतंत्र और राजतंत्र—दोनों में अनुशासन, व्यवस्था और नियम-कानून चलते हैं। किसी भी राज्य व्यवस्था में संविधान का होना एक बड़ा अनुशासन है। आचार्य भिक्षु ने भी तेरापंथ में संविधान, लिखत और मर्यादा की स्थापना की। किसी भी संगठन, राष्ट्र या संस्था में संविधान का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। विधान और व्यवस्था न होने पर वह लंबे समय तक कैसे चल सकता है? विधान और व्यवस्था हों और उनका पालन भी हो—यदि कहीं-कहीं उल्लंघन भी हो जाए—तो भी विधान का होना महत्वपूर्ण होता है। जहां नियम का उल्लंघन होता है, वहां दण्ड का भी विधान होता है। दण्ड की व्यवस्था होने से अन्य लोग भी नियमों का उल्लंघन करने से बचते हैं। इसलिए लोकतंत्र में न्यायपालिका की आवश्यकता होती है।

इसी प्रकार आचार्य भिक्षु ने भी अनुशासन की व्यवस्था की। उन्होंने यह नियम दिया कि सभी साधु-साध्वियां एक ही आचार्य के शिष्य होंगे। एक आचार्य के विधान का आज भी अनुपालन हो रहा है। यह एक मर्यादा और अनुशासन है। सभी के जीवन में अनुशासन बना रहे, यही काम्य है।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त अनेक तपस्वियों ने अपनी-अपनी तपस्या का आचार्यश्री के श्रीमुख से प्रत्याख्यान किया। पारसमूल दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

विनम्र अनुरोध

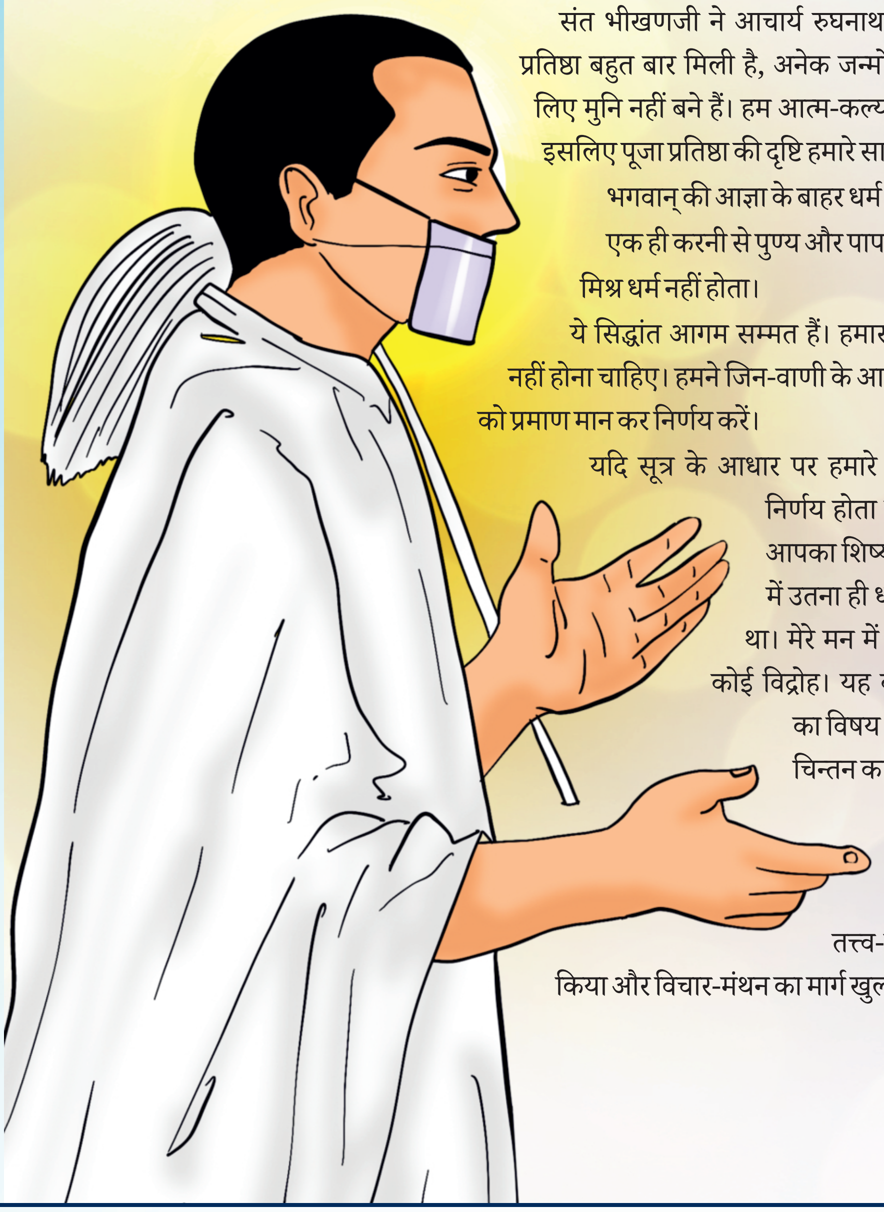

संत भीखणजी ने आचार्य रुघनाथजी से कहा– हमें पूजा-प्रतिष्ठा बहुत बार मिली है, अनेक जन्मों में मिली है। हम उसके लिए मुनि नहीं बने हैं। हम आत्म-कल्याण के लिए मुनि बने हैं। इसलिए पूजा प्रतिष्ठा की दृष्टि हमारे सामने नहीं रहनी चाहिए।

भगवान् की आज्ञा के बाहर धर्म नहीं होता।

एक ही करनी से पुण्य और पाप– दोनों नहीं होते।

मिश्र धर्म नहीं होता।

ये सिद्धांत आगम सम्मत हैं। हमारा किसी विषय में आग्रह नहीं होना चाहिए। हमने जिन-वाणी के आधार पर घर छोड़ा है, उसी को प्रमाण मान कर निर्णय करें।

यदि सूत्र के आधार पर हमारे आचार और विचार का निर्णय होता है तो आप मेरे गुरु हैं, मैं आपका शिष्य हूं। आपके प्रति मेरे मन में उतना ही धर्मानुराग है जितना पहले था। मेरे मन में न कोई विरोध है और न कोई विद्रोह। यह कोई तात्कालिक निर्णय का विषय नहीं है पर विषय है गंभीर चिन्तन का। इस पर हम लम्बे समय तक चिन्तन करेंगे। इस प्रकार उन्होंने अपने आचार्य को तत्त्व-चर्चा के लिए प्रसन्न किया और विचार-मंथन का मार्ग खुल गया।

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

मुनि वस्त्र कैसे रख सकता है?

ढूंढाड़ प्रदेश में स्वामी भीखणजी के पास कुछ सरावगी चर्चा करने के लिए आए और बोले– 'मुनि धागे जितना भी वस्त्र नहीं रख सकता। जो रखते हैं, वे परिषह से दूर भागते हैं।'

तब स्वामीजी बोले– 'परीषह कितने हैं?'

तब वे बोले– 'परीषह बाईस।'

तब स्वामीजी बोले– 'पहला परीषह कौन-सा है।'

तब वे बोले– 'पहला परीषह भूख का है।'

स्वामीजी ने पूछा– 'तुम्हारे मुनि आहार करते हैं या नहीं?'

तब वे बोले– 'दो दिन से एक बार करते हैं।'

तब स्वामीजी बोले– 'तुम्हारे मुनि तुम्हारे ही हिसाब से दूसरे परीषह से भी पराजित हो गए।'

तब वे बोले– 'वे प्यास लगने पर पानी पीते हैं।'

तब स्वामीजी बोले– 'हम भी सर्दी आदि से बचने के लिए वस्त्र ओढते हैं और यदि भूख लगने पर अन्न प्यास लगने पर पानी पीने से वे परीषह से पराजित नहीं होते हैं तो ठंड आदि से बचने के लिए वस्त्र रखने पर भी हम परिषह से पराजित नहीं होते।'

इत्यादि अनेकविध चर्चा से वे निरुतर हो गए।

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

बारह व्रत

व्रत धर्म है। अनुत्तर धर्म है और वह मोक्ष का मूलाधार है। भगवान महावीर ने श्रावक के लिये बारह व्रतों का विधान किया है और उसे अगार धर्म कहा है। एक गृहस्थ भी बारह व्रतों के माध्यम से धर्म की आराधना कर सकता है और सुगति (देव गति) का अधिकारी बन सकता है।

बारह व्रतों की आराधना श्रावकाचार है और इसकी महिमा अपरम्पार है। श्रावक धर्म व्यापक धर्म है और इसकी साधना अपेक्षाकृत सरल है। भगवान ने साधु की तरह श्रावक को भी तीर्थ माना है। व्रत की अपेक्षा से श्रावक तीर्थ है। किसी व्यक्ति का तीर्थ होना गौरवास्पद है। श्रावक व्रताव्रती, धर्माधर्मी, संयमासंयमी और बाल पंडित कहलाते हैं। व्रतों की साधना से जीवन उच्च बनता है और जीवन शैली उन्नत बनती है। आचार्य श्री तुलसी के शब्दों में श्रावक श्रद्धाशील, विश्वासपात्र और साधनाशील होता है। वह भी लक्षित मंजिल की ओर चलने वाले होते हैं। उनके जीवन में धर्म, श्रद्धा और व्रत का मणिकांचन योग होता है। श्रावक मिथ्यात्व में दूर और अव्रत से यथाशक्ति दूर रहते हैं। साधु की तरह श्रावक भी जिनशासन के अभिन्न अंग होते हैं। बारह व्रतों की साधना से जीवन सचमुच धन्य बनता हैं तथा वह प्रेरक और प्रशंसनीय बन जाता है।

क्या आप जानते हैं?

भिगोए हुए बादाम में कोई अंकुरित बादाम हो तो उसे सचित्त माना जाता है। पपीता आदि फलों पर जरा सा छिलका रह जाए, यदि उसमें किंचित भी हरापन हो तो उसे सचित्त माना जाता है।

साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह रात्रि भोजन त्याग करें।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
18 अगस्त - 24 अगस्त, 2025

भुक्त भोगों की ना हो स्मृति : आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ कन्या मण्डल के 21वें त्रिदिवसीय अधिवेशन 'आस्था' का मंचीय कार्यक्रम हुआ आयोजित

कोबा, गांधीनगर।
05 अगस्त, 2025

महातपस्वी ज्योतिपुंज युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया - जिसकी आदि नहीं है, अतीत नहीं है और जिसका कोई अंत नहीं है, पश्चात्वर्ती भाग नहीं है, न जिसका पूर्व भाग है और न पश्चात् भाग है, उस चीज में मध्य भाग भी नहीं हो सकता। मध्य और वर्तमान होता है तो कोई अतीत और अनागत की बात भी संभवतः सर्वत्र या प्रायः होने की संभावना की जा सकती है। जैसे नमस्कार महामंत्र में मध्यवर्ती पद णमो आयरियाणं है तो पूर्व भी दो पद हैं और पश्चात् में भी दो पद हैं, तो इसे हम नमस्कार महामंत्र का मध्यवर्ती पद कह सकते हैं। जैसे कोई पुस्तक है, उसके बीच में एक सूत्र है तो उसके पहले भी कोई चीज है और बाद में भी कोई चीज है।

सूत्र में कहा गया है कि अतीत के किसी भुक्त भोग की स्मृति नहीं की जाती है और भविष्य की कोई भोगाशंसा भीतर में भी नहीं है। इतनी परम साधना हो गई है तो वर्तमान में भी भोगाशंसा संभवतः रहेगी नहीं, और है तो बहुत जल्दी ही समाप्त होने की संभावना है। अतीत के भुक्त भोगों की ज्यादा स्मृतियां करते रहेंगे और भविष्य की भोगाशंसा पुष्ट कर लेंगे तो वर्तमान में भी भोगाशंसा हो सकेगी, रह सकेगी।

व्यक्ति के भीतर विषय, आकांक्षा, लालसा रहती है। अभी हमारे भीतर कषाय के संस्कार हैं तो अतीत में भी हमारे भीतर कषाय रहा है और वर्तमान की छद्मस्थता की स्थिति में कुछ आगे तक भी कषाय की अवस्था रहेगी। साधु में भी जब तक बारहवां गुणस्थान नहीं आएगा, किसी न किसी रूप में मोह और कषाय बना रहेगा, भले ही अनुदयावस्था में रहे। अध्यात्म की साधना में विषयाशंसा, भोगाशंसा, कामाशंसा भी परित्याज्य होती है।

अठारह पापों के संदर्भ में बताया गया है - प्राणातिपात पापस्थान। कोई जीव की हिंसा करता है तो उसके प्राणातिपात के रूप में मोह का उदय हो रहा है। उस कर्म के उदय के कारण वह दूसरों के प्राणों का हरण करता है। अतीत का कर्म वर्तमान की हिंसा का कारण है और वर्तमान में की जा रही हिंसा से भविष्य के लिए पाप का बंध हो रहा है। केवलज्ञानी जो तेरहवें गुणस्थान में हैं, उनके भी ईर्यापथिकी क्रिया के रूप में बंध होता है। बंधा है तो भोग भी होगा और झड़ेगा भी। भोगने को मध्य मान लें, पूर्व का संबंध है और भविष्य में कर्म का झड़ना हो गया। आयारो में कहा गया है कि पूर्व और पश्चात् नहीं है तो फिर मध्य भी कैसे हो सकेगा। विषयाशंसा, भोगाशंसा में अतीत का स्मरण न किया जाए, भविष्य के लिए अनुचिंतन न किया जाए - यह सघन साधना है। तो वर्तमान में भी भोगाशंसा कमजोर पड़ जाएगी या फिर रह नहीं पाएगी।

चौदह गुणस्थानों में साधना का एक सुंदर क्रम हमें संवर के संदर्भ में भी मिल सकता है। ज्यों-ज्यों संवर की साधना होगी, कषाय क्षीण होंगे या उपशांत होंगे। गुणस्थानों का विकास हो जाता है। चौथे गुणस्थान में मिथ्यात्व आश्रव नहीं रहता। पांचवें गुणस्थान में अव्रत आश्रव कुछ निरूद्ध हो जाएगा, सर्वथा अव्रत आश्रव रुक गया तो छठा गुणस्थान। प्रमाद आश्रव नहीं रहा तो सप्तम गुणस्थान। आगे कषाय की भी उपशांतता या क्षीणता होती जाती है। चौथे गुणस्थान में भी क्षायिक सम्यक्त्व उपलब्ध रह सकता है। तो छठा गुणस्थान है तो अतीत में भी कषाय रहा है और आगे भी रहेगा और वर्तमान में भी है। बारहवां गुणस्थान आ गया तो अतीत में तो कषाय रहा है, परंतु वर्तमान में नहीं है और आगे भी कभी जीव के परिणामों में कषाय-राग-द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ का भाव नहीं आ सकेगा।

व्यावहारिक रूप में हम गृहस्थ के जीवन में देखें कि जवानी की अवस्था है तो अतीत में कभी बचपन भी रहा है और आगे आयुष्य लंबा है तो वृद्धावस्था भी आ सकती है। जवानी को यदि मध्य मान लें, शैशव को अतीत मान लें और वार्धक्य को हम भविष्य मान सकते हैं। इस मध्यवर्ती अवस्था जवानी में आदमी संयम का यथोचित रूप में ध्यान रखता है। नशे और गलत व्यसनों से मुक्त रहता है तो उन अच्छे कार्यों के फल मिल सकते हैं। बचपन में परिपक्वता के अभाव में कोई ज्यादा कार्य न कर सके और भविष्य में वृद्धावस्था में शरीर में कमजोरी आ जाए तो आदमी ज्यादा कार्य न कर सके। युवावस्था में व्यक्ति को धर्मयुक्त कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। अभी सक्षमता है तो इसका उपयोग अच्छे धार्मिक कार्य करने में करें। सेवा करें, दूसरे का हित करने का प्रयास करें। व्यवहार के परिवेश में आरोह-अवरोह की स्थितियां आ जाएं तो इन स्थितियों से हमारा मन ज्यादा अवांछनीय रूप से प्रताड़ित या प्रभावित न हो। मन में शांति रहे, समता भाव रहे, मन दुःखी न बने - साधना की यह भी एक स्थूल निष्पत्ति है।

आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के तत्त्वावधान में तेरापंथ कन्या मण्डल के 21वें त्रिदिवसीय अधिवेशन 'आस्था' के मध्य दिन संभागी कन्याएं पूज्य सन्निधि में मंचीय कार्यक्रम के लिए उपस्थित थीं। इस संदर्भ में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा, राष्ट्रीय कन्या मण्डल प्रभारी अदिति सेखानी ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

(शेष पेज 13 पर)

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।